04- विसंगतियों पर रोचक कटाक्ष है फटे में टांग

05- स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार अपनाएं- बीमारियों को दूर भगाएं

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 07 अप्रैल, 2024

06- मित्र फेंड्स कन्या शाला में 'डोनेट 999 कैंपेन' का शुभारंभ

07- मनोरंजन की दुनिया में अपराध बिकाऊ मसाला!

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 177 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

एक आसमान की उड़ानें

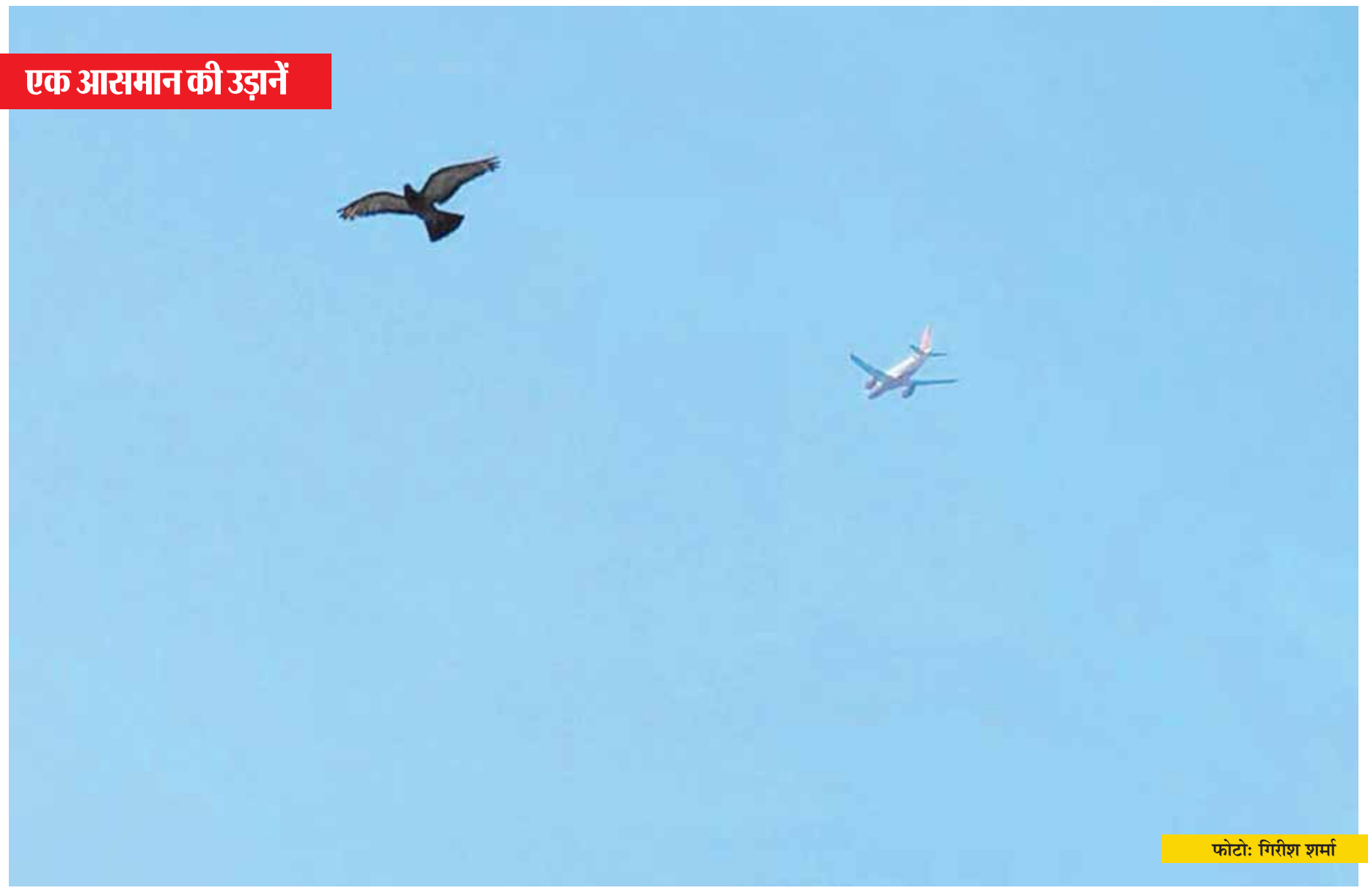

फोटोः गिरीश शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

राजस्थान से पीएम का कांग्रेस और सोनिया का मोदी पर वार

● पीएम मोदी बोले-कांग्रेस के घोषणापत्र में मुस्लिम लीग और वामपंथी हैं हावी ● सोनिया बोलीं,मोदी जी ने खुद को महान बताकर लोकतंत्र का चीरहरण किया

● मोदी बोले-तीसरे कार्यकाल के 100 दिन में बड़े फैसले लूंगा

● तैयारी करके बैठा हूं, दस साल में भ्रष्टाचारियों पर जो कार्रवाई हुई वह ट्रेलर है

पुष्कर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि तीसरे कार्यकाल के पहले 100 दिन में और बड़े फैसले लेने जा रहा हूं। मैं पूरी तैयारी करके बैठा हूं। दस साल में जो कार्रवाई हुई, वह ट्रेलर है। बहुत कुछ बाकी है। मोदी ने शनिवार को अजमेर के पुष्कर के मेला मैदान में चुनावी सभा को संबोधित किया।

उन्होंने कहा- भाजपा की सरकार देश के 80 करोड़ जरूरतमंदों को मुफ्त अनाज देती है। दस साल में 30 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा गरीबों के खाते में सीधे भेजे हैं। कांग्रेस की सरकार में पैसा बीच में लूट लिया जाता था। कांग्रेस के एक पीएम ने कहा था कि दिल्ली से 1 रुपए भेजते हैं तो 15 पैसा पहुंचता है। यदि 30 लाख करोड़ रुपए उनके पास होते तो क्या होता। हमने जांच की तो पता चला कि कांग्रेस ने 10 करोड़ से ज्यादा ऐसे फर्जी लाभार्थी बनवाकर रखे थे, जिनका कभी जन्म ही नहीं हुआ। योजनाएं उनके नाम पर चढ़ जाती थी। आपके हक का पैसा सीधे कांग्रेस के बिचौलियों के पास जा रहा था। मोदी बोले- कल (5 अप्रैल) कांग्रेस ने झूठ का एक पुलिंदा जारी किया है। यह कांग्रेस को बेनकाब करने वाला घोषणा पत्र है। आप देखें कि हर पन्ने पर भारत के टुकड़े करने की बू आ रही है। कांग्रेस के घोषणा पत्र में वही सोच झलकती है, जो सोच आजादी के समय मुस्लिम लीग में थी।

जयपुर से सोनिया का पीएम मोदी पर बड़ा वार, कहा-वह खुद को महान मानते हैं

कहा- देश कुछ लोगों की जागीर नहीं है,आज लोकतंत्र खतरे में हैं, हमें इसे बचाना है

जयपुर (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए कांग्रेस शनिवार को जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडिम में रैली की। इस रैली में कांग्रेस पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बड़ा हमला बोला। सोनिया गांधी ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि यह देश कुछ लोगों की जागीर नहीं है। देश से बड़ा कोई नहीं हो सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से आज हमारे देश में ऐसे नेता सत्ता में विराजमान हैं, जो लोकतंत्र का चीरहरण कर रहे हैं। आज लोकतंत्र खतरे में हैं। लोकतांत्रिक संस्थाओं को बर्बाद किया जा रहा है। हमारे संविधान को बदलने की कोशिश की जा रही है। ये सब तानाशाही है और हम सब इसका जवाब देंगे। सोनिया गांधी ने कहा कि, मोदी जी खुद को महान मानकर देश और लोकतंत्र की मर्यादा का चीरहरण कर रहे हैं। विपक्षी नेताओं को डराने, धमकाने और भाजपा में शामिल कराने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। हमारे देश का लोकतंत्र खतरे में है। इसे बचाने के लिए हमसब एकजुट हुए हैं।

सुप्रभात

तयशुदा होते हुए भी तयशुदा कुछ भी नहीं
ज़िन्दगी के ज़श्न में जलसा हुआ कुछ भी नहीं।
खूब जोता, और बखरा, बीज़ भी बोया मगर
खाद, पानी भी दिया पैदा हुआ कुछ भी नहीं।
बेचने वाले ही करने लग गए सब कुछ खरीद
बिक गया बेचा गया, सौदा हुआ कुछ भी नहीं।
ये हुआ शोरे तरक्की का असर, भरमा दिया
मुग्धता सर चढ़ गयी ज़्यादा हुआ कुछ भी नहीं।
क्या हुआ कैसे हुआ, कितना हुआ सुनते रहे
सब सुना कानों का था भोगा हुआ कुछ भी नहीं।
उलझनें तो पेशतर थीं और भी उलझा दिया
उलझनों में उलझनें सुलझा हुआ कुछ भी नहीं।
सौ दिनों में बस अढ़ाई कोस ही तय कर सके
दौड़ना होता रहा चलना हुआ कुछ भी नहीं।।

– महेश कटारे 'सुगम'

आतंकी भागकर पाकिस्तान गए तो उन्हें घुसकर मारेंगे–राजनाथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि अगर आतंकवादी भारत में शांति भंग करने या आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने की कोशिश करते हैं, तो उन्हें करारा जवाब दिया जाएगा। अगर वे पाकिस्तान भाग जाते हैं, तो भारत उन्हें मारने के लिए पड़ोसी देश में घुस जाएगा। राजनाथ सिंह की यह टिप्पणी ब्रिटेन के गार्जियन अखबार में पब्लिश रिपोर्ट के बाद आई, जिसमें आरोप लगाया गया है कि भारत सरकार ने विदेशी धरती पर रहने वाले आतंकवादियों को खत्म करने की रणनीति के तहत पाकिस्तान में कई लोगों की हत्या की।

चीन को 'औकात' में लाने की तैयारी में अमेरिका

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में तैनात करेगा परमाणु मिसाइलें

टोक्यो (एजेंसी)। अमेरिकी सेना के इंडो-पैसिफिक कमांडिंग जनरल चार्ल्स फ्लिन ने बुधवार को टोक्यो की अपनी यात्रा के दौरान चीन के खिलाफ सैन्य तैयारियों पर बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने जापानी मीडिया के साथ इंटरव्यू में कहा कि अमेरिकी सेना ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में मध्यम दूरी की मिसाइलों को तैनात करने की योजना बनाई है। फ्लिन ने जापान में अमेरिकी दूतावास में कहा, क्षेत्र में अपने सहयोगियों और साझेदारों के साथ काम करते हुए और हमारे पास मौजूद विभिन्न संयुक्त अभ्यासों के साथ मिलकर काम करते हुए, उन मिसाइलों को जल्द ही क्षेत्र में तैनात किया जाएगा। अमेरिकी मिसाइलों को तैनात करने का उद्देश्य चीन के खिलाफ प्रतिरोध को मजबूत करना है। चीन दक्षिण चीन सागर क्षेत्र में अपनी सैन्य तैयारियों का लगातार विस्तार कर रहा है। चीन की मिसाइल क्षमताओं के आधुनिकीकरण के बारे में फ्लिन ने कहा कि इसका मुकाबला करने के तरीके खोजना अमेरिकी सेना के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। फ्लिन ने किसी विशेष मिसाइल का नाम बताने से इनकार कर दिया, लेकिन ऐसा माना जाता है कि अमेरिका टाइफॉन मिसाइल प्रणाली को तैनात करने का इरादा रखता है।

कांग्रेस की दुकान बंद करेंगे, बहनों के पैसे नहीं

सीएम मोहन यादव बोले– बीजेपी में आने वालों से जिन्हें डायबिटीज की बीमारी, वह परहेज करें

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दूसरे दलों के नेताओं के बीजेपी में शामिल होने पर बयानबाजी करने वाले भाजपा नेताओं को नसीहत देते हुए कहा कि हम भी बूथ की मीटिंग करते थे। बीजेपी ही है जो बूथ के कार्यकर्ता को उठाकर मुख्यमंत्री बनाती है। अभी हमारे कई मित्र कह रहे हैं कि बीजेपी में इतने लोग आ जाएंगे तो हमारा क्या होगा?

उन्होंने कहा कि बीजेपी आने वालों को हम दूध में शक्कर की तरह देख रहे हैं। शक्कर की तरह मिलेंगे तो दूध का आनंद बढ़ेगा, फिर उसमे क्या नुकसान है? उन्होंने कहा कि जिसको डायबिटीज की बीमारी है, वह परहेज करें। मत खाओ, तुमको शक्कर नहीं खाना है तो लेकिन हमको खाना भी आता है और सबको पचाना भी आता है। जिनको अच्छा काम करना है वह आ रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजधानी के वार्ड 10 के बूथ क्रमांक 46 पर बूथ और पन्ना समिति की बैठक में हिस्सा लिया। बैठक में लोकसभा प्रत्याशी आलोक शर्मा भी मौजूद रहे। बैठक में सीएम यादव ने कहा कि हमें नदी की तरह बहते जाना है। नदी में बहकर बांध बना लें तो कई घरों के खेत सींचते हैं और कई घरों को पानी मिलता है। जैसे बार्डर पर जवान देश की रक्षा कर रहा है वैसे ही पार्टी के जवान पार्टी की रक्षा कर रहे हैं। समझदारी इसमें है कि हमको समय के साथ सबको लेकर चलना है।

राहुल पर तंज, तू नेता है ,तू नेता है और वह भाग जा रहा है– सीएम यादव ने राहुल गांधी और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस ने देश को लगातार गुमराह किया। एक परिवार को प्रमुख बनाया। उसमें उतनी क्षमता नहीं उतनी योग्यता नहीं, किसी को जबरदस्ती नेता बनाओ तो बनेगा क्या..वो बनना क्या चाहता है यह बना क्या रहे हैं? ला-लाकर उसको घड़ी-घड़ी माथे पर टिका रहे हैं, तू नेता है, तू नेता है और वो भाग जा रहा है। हमारी पार्टी में काम करते-करते कहां से कहां बिठा देते हैं। वर्ष 2014 के पहले पीएम नरेंद्र मोदी क्या थे और जब मोदी आए तो गंगा की तरह हिमालय पर छा गए।

अब बंगाल के मेदिनीपुर में एनआईए टीम पर हमला

लोगों ने लाठी-डंडे लेकर अफसरों को रोका; ममता बोलीं-एनआईए ने ही महिलाओं पर हमला किया

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर ईस्ट के भूपतिनगर में शुक्रवार रात एनआईए की टीम पर हमला हुआ। इस दौरान एक अफसर को चोटें भी आई हैं। हमला भूपति नगर में हुआ। भूपतिनगर में एनआईए टीम के सामने लोग लाठी-डंडे लेकर अड़ गए। एनआईए की टीम ने जब आरोपियों को ले जाने की कोशिश की, तो लोगों ने उनका विरोध किया। लोगों ने एनआईए की गाड़ी पर पथराव किया। कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्देश पर एनआईए टीम भूपति नगर में 2022 में हुए बम धमाके की जांच करने पहुंची थी।

पुलिस ने 3 लोगों- बोलाइ मैती, समय मैती, और मानवदत्त जाना को गिरफ्तार किया है। पश्चिम बंगाल के गर्वनर सीवी आनंद बोस ने कहा, मुझे घटना के बारे में पता चला है, दोषियों के खिलाफ ऐक्शन लिया जाएगा। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि एनआईए के अफसरों पर हमला नहीं हुआ है, बल्कि उन्होंने ही महिलाओं पर हमला किया। एनआईए अफसरों ने रात में रेड क्यों की। क्या उनके पास पुलिस की परमीशन थी। लोगों ने वैसे ही बर्ताव किया, जैसा रात में किसी भी अनजान व्यक्ति के आने पर किया जाता।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 26°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 07 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ग्रीस सेना प्रमुख आ रहे भारत, अब घिरेंगे एर्दोगान !

● तुर्की से निपटने के लिए भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीद सकता है ग्रीस

एथेंस (एजेंसी)। भारत का रक्षा एक्सपोर्ट लगातार बढ़ रहा है। भारत की ब्रह्मोस सुपरसोनिक

क्रूज मिसाइल के लिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मांग बढ़ती जा रही है। फिलीपींस ने इसके लिए भारत के साथ डील काफी पहले ही फाइनल कर ली थी तो मध्य पूर्व और अफ्रीकी देशों ने भी इस मिसाइल में रुचि दिखाई है। अब इन देशों में एक नाम ग्रीस का भी है, जो अपने दुश्मन तुर्की से निपटने के लिए इस मिसाइल को पाना चाहता है। ग्रीस के सेना प्रमुख जनरल दिमित्रिस हूपिस अगले सप्ताह भारत की यात्रा पर पहुंचने वाले हैं। इस दौरान ग्रीस के भारत के साथ ब्रह्मोस मिसाइल के बारे में चर्चा करने की उम्मीद है। ग्रीस सेना प्रमुख यात्रा के दौरान सैन्य सहयोग कार्यक्रम पर हस्ताक्षर करेंगे।

अब सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 18 अप्रैल तक बढ़ी

● सुनवाई से एक दिन पहले चिट्ठी सामने आई थी, इसमें कहा-जल्द ही बाहर मिलेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम और आम आदमी पार्टी (एएपी) नेता मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत और 12 दिनों के लिए बढ़ गई है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने उन्हें 18 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत में भेजा है। दरअसल, दिल्ली शराब नीति केस को लेकर तिहाड़ जेल में बंद सिसोदिया की हिरासत 6 अप्रैल को खत्म हो रही थी। उन्हें आज कोर्ट में पेश किया गया। ईडी ने आरोपियों की तरफ से देरी के अलग-अलग आधारों पर उनकी जमानत याचिका का विरोध किया। कोर्ट ने ईडी की आगे की दलील पर सुनवाई 10 अप्रैल दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी है।

केरल के सीएम ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो पर उठाया सवाल

● कहा- कांग्रेस के न्याय पत्र में सीएए का जिक्र नहीं, 370 का भी विरोध नहीं किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिया गठबंधन में शामिल केरल की लेफ्ट सरकार ने कांग्रेस के मैनिफेस्टो पर सवाल उठाया है। राज्य के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने शनिवार को कहा- सीपीआई (एम) के मैनिफेस्टो में सीएए को रद्द करने की बात कही गई है, लेकिन कांग्रेस के घोषणापत्र में ऐसा कोई वादा नहीं किया गया है। विजयन ने कहा कि कांग्रेस आर्टिकल 370 को हटाए जाने के फैसले के खिलाफ भी प्रोटेस्ट नहीं कर पाई थी। कांग्रेस वोट के लिए अपने मूल्यों से समझौता करने को तैयार है। ऐसे घोषणापत्र के जरिए कांग्रेस ने देश की आम जनता और अल्पसंख्यकों को धोखा देने का काम किया है।

संक्षिप्त समाचार

गुजरात में रूपाला के टिकट पर बढ़ी बीजेपी की मुश्किल

● अब क्षत्रिय महिलाओं ने दी विरोध में 'जौहर' की धमकी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में केंद्रीय मंत्री पुरषोत्तम रुपाला के बयान के खिलाफ आक्रोश कम नहीं हो रहा है। क्षत्रिय समाज की सात महिलाओं ने रानी पद्मावती और उनकी दासियों की तर्ज पर स्वाभिमान की रक्षा के लिए जौहर (आत्महत्या) करने की धमकी दी है। इसके बाद राजकोट के साथ गुजरात की राजनीति गरमा गई है। क्षत्रिय समाज की तरफ से लगातार यह मांग की जा रही है कि बीजेपी राजकोट से किसी और चुनाव लड़ाए।

क्षत्रिय समाज का अपमान करने वाले रुपाला की टिकट वापसी के लिए अब महिलाएं सामने आई है। महिलाओं के रुपाला के घर के बाहर आत्महत्या करने का वीडियो सामने आने के बाद महिलाओं के घर के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। महिलाओं ने जौहर से पहले मेहंदी भी रखवाई थी। आज वे कुछ मंदिर के दर्शन करने के लिए जाने वाली हैं। महिलाओं ने जौहर की धमकी पुरषोत्तम रुपाला का टिकट वापस नहीं लिए जाने के बाद दी है, तो वहीं बीजेपी के कैंडीडेट पुरषोत्तम रुपाला ने दिल्ली से लौटने के बाद राजकोट में प्रचार शुरू कर दिया था।

बरेली दंगों के मास्टर माइंड तौकीर रजा की बढ़ीं मुश्किलें

● बहू ने की ईडी जांच की मांग, कहा-देश के लिए खतरा है

बरेली/लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली में जिले 2010 में हुए दंगे के दोषी मौलाना तौकीर रजा की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। कोर्ट ने मौलाना तौकीर को दंगे के लिए मास्टरमाइंड मानते हुए दोषी भी ठहराया था। इसी बीच आला हजरत खानदान की बहू रहीं निदा खान ने मौलाना तौकीर रजा पर जमकर हमला बोला है। निदा ने बीजेपी सरकार से मौलाना तौकीर के खिलाफ ईडी की जांच कराने की मांग की है। निदा खान ने कहा, मौलाना के पास ना ही कोई फैक्ट्री है ना

बिजनेस, लेकिन फिर भी इतनी आलीशान जिंदगी जी रहे हैं। लड़का ऑस्ट्रेलिया में पढ़ रहा है। आखिर इतना पैसा कहा से आ रहा है। निदा ने कहा कि मौलाना को किसी ऐसी जगह से फंडिंग हो रही है, जिससे हमारे देश को नुकसान पहुंच सकता है या फिर अंदर ही अंदर नुकसान पहुंचा रहा है। तौकीर रजा की बहू निदा खान ने अपना वीडियो बयान जारी करते हुए कहा कि यूपी में बीजेपी सरकार होने के कारण सूबे का लॉ एंड आर्डर बहुत सख्त है। मौलाना तौकीर रजा 2010 के दंगों में आरोपी हैं।

भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर मनाया स्थापना दिवस,भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि पहुंचे अनेक बूथों पर

संसदीय क्षेत्र के विकास के लिए कोई कसर नही छोड़ूंगी - सावित्री ठाकुर

सुबह सवेरे, धार। भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर मनाया स्थापना दिवस,भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि पहुंचे अनेक बूथों पर . भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने भाजपा के स्थापना दिवस पर जिले के बदनावर विधानसभा की ग्राम पंचायत मुराड़का बूथ क्रमांक 192 पर कहा कि 6 अप्रेल 1980 को भाजपा की स्थापना हुई। पं.दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी के अंत्योदय एकात्मवाद विचारधारा को लेकर गरीब कल्याण के लिए भाजपा की सरकारों ने कोई कसर नही छोड़ी। हमारा लक्ष्य है अंतिम छोर तक के व्यक्ति को आगे की पंक्ति में खड़ा करना। उन्होनें कहा कि भारतीय जनसंघ के प्रेरणास्त्रोत डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर के लिए अपना बलिदान दे दिया,और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने एक झटके में धारा-370 उखाड़ फेंककर डॉ.मुखर्जी जो की श्रद्धांजलि देने का कार्य किया।उन्होनें कहा कि 2014 से पहले भारत और 2024 का भारत की हम कल्पना करेंगे मोदी जी के नेतृत्व में हर गरीब के लिए अनेक योजनाओं के माध्यम से विकास कार्यों को आगे बढ़ाया गया।

मनावर विधानसभा बाकानेर मंडल ग्राम पंचायत कोठड़ा के स्थापना दिवस पर भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने कहा कि यह चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लड़ रहे है भारत हमारा समृद्ध बने इसके लिए तीसरी बार होने जा रहे चुनाव में उन्हें ताकत देने का काम करें। उन्होनें कहा कि यह लोकसभा चुनाव भारत की प्रतिबद्धता के बीच है। कांग्रेस विकास का झूठा ढिंढोरा पीटती रही,और भाजपा की केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व कर रहे नरेन्द्र मोदी जैसे महान नेता को ताकत देने की जरूरत है,जो कि 4 करोड़ पक्के मकान प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए,14 करोड़ शौचालय का निर्माण 25 करोड से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से निकालकर उनको समृद्ध बनाया गया। ऐसी अनेकों योजनायें है,जिन्होनें हर गरीब की तस्वीर को बदलकर विकास की दिशा से जोड़ने का कार्य किया है। उन्होनें स्थापना दिवस पर कहा कि नरेन्द्र मोदी की आंधी को वोट के माध्यम से हम सबको बदलना है, प्रचंड बहुमत के साथ आपकी बहन को आप सबका आशीर्वाद मिलें,और दिल्ली में सांसद बनकर तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने में उनका सहयोग हो।

भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल ने कुक्षी विधानसभा ग्राम डेहर बूथ क्रमांक 192 पर कहा कि भाजपा का लक्ष्य हर गरीब की सेवा करना और विकास की दिशा से जोड़ने का है। भारतीय जनसंघ से लेकर भाजपा संगठन के महापुरूषों ने वटवृक्ष को आगे बढ़ाने का काम किया। आज देश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी विचारधारा को लेकर राष्ट्र के विकास के लिए कोई कसर नही छोडी है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि भाजपा ने जिले के 1879 बूथों पर भाजपा का स्थापना दिवस मनाया। भाजपा नेता और जनप्रतिनिधि,जिला पदाधिकारी विधानसभा प्रभारी संयोजक सभी मंडल अध्यक्ष मंडल प्रभारी पहुंचे अनेक बूथों पर पहुंचकर बुथ विजय अभियान के 10 संगठन करणीय कार्य की जानकारी दी। जिले में विधायक कालू सिंह ठाकुर, भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर,विनोद शर्मा,रमेश धाड़ीवाल,दिलीप पटोंदिया, मोहन भायल जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा,वेलसिंह भूरिया शिवराम कन्नौज पूर्व विधायक सहित अनेक जनप्रतिनिधि अपने अपने चयनित बूथों पर जाकर भाजपा का स्थापना दिवस मनाया ।

अब लोकसभा चुनाव में भी गूंजा 'योगी मॉडल'

● बुलडोजर फॉर्मूला रहा हिट, चुनावी रण मिल सकता है फायदा

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने लॉ एंड ऑर्डर को लेकर जो प्रयोग किए, उसकी खूब चर्चा है। खासतौर से बीजेपी शासित दूसरे राज्य तो इस योगी मॉडल को अपनाते हुए भी नजर आए हैं। बुलडोजर ऐक्शन, लव जिहाद और गौ सुरक्षा को लेकर बने कानून इसमें प्रमुख हैं। यूपी सरकार की ओर से अब चुनावी रैलियों में भी लगातार यह दावा किया जाता रहा है कि कैसे उसने कानून और व्यवस्था को मजबूत किया है। साथ ही माफिया राज खत्म किया गया है जिससे राज्य में रोजगार और निवेश बढ़ा है। लोकसभा चुनाव के रण में इस सफलता को डबल इंजन सरकार के कामयाब फॉर्मूले के तौर पर पेश किया जा रहा है। साल 2020 में योगी आदित्यनाथ ने पहली बार बुलडोजर का इस्तेमाल किया और अपराधी के खिलाफ इसे त्वरित ऐक्शन के तौर पर दिखाया गया। इसका इस्तेमाल गैंगस्टर विकास दुबे के कानपुर के बिकारु गांव में हुआ जहां उसकी कथित अवैध संपत्तियों को ढहा दिया गया। दरअसल, दुबे और उसके गुर्गों ने रेड के दौरान पुलिस अधिकारियों पर फायरिंग की थी। इस ऐक्शन को लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आईं।

सागर में ट्रक और बाइक की भिड़ंत, दो की मौत

बाइक को टक्कर मारते हुए पलटा तरबूज से भरा ट्रक,

सागर (नप्र)। सागर में जैसीनगर थाना क्षेत्र के ग्राम हिन्नपुर के पास तेज रफ्तार ट्रक और बाइक की भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में बाइक सवार दो लोगों की मौत हो गई। वहीं ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शवों का पंचनामा बनाकर अस्पताल भेजा। मामले में मर्ग कायम कर पुलिस जांच कर रही है।

जानकारी के अनुसार सागर-सिलवानी स्टेट हाईवे पर ग्राम हिन्नपुर के पास सिलवानी की ओर से आ रहे ट्रक से बाइक की टक्कर हो गई। दुर्घटना में बाइक सवार सड़क पर जा गिरे। वहीं तरबूज से भरा ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। घटना देख राहगीर मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर शवों का पंचनामा बनाया। जांच में मृतकों की पहचान वीरेंद्र गौंड उम्र 40 साल निवासी जमुनिया, संजू अहिरवार उम्र 27 साल निवासी रम्मन टेकापार, सुल्तानगंज थाना के रूप में हुई है। शव

का पीएम कराकर पुलिस ने परिवार वालों को सौंप दिए हैं।

प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार तरबूज से भरा ट्रक सिलवानी की ओर से आ रहा था। वहीं बाइक सवार जैसीनगर की ओर से जा रहे थे। तभी हिन्नपुर गांव के पास दोनों वाहनों की आमने-सामने से टक्कर हो गई। टककर के बाद ट्रक अनियंत्रित हुआ और सड़क किनारे पलट गया। घटना के बाद ट्रक ड्राइवर मौके से भाग निकला। मामले में पुलिस प्रकरण दर्ज कर जांच कर रही है।

छात्रा के साथ छेड़छाड़ कर धमकाया

भोपाल। राजधानी में एक छात्रा के साथ कार्यालय में छेड़छाड़ कर उसे मुख्यमंत्री के नाम पर धमकाने का मामला सामने आया है। आरोपी छात्रा को यह कहकर धमका रहा था कि उसके चाचा पत्रकार हैं और चाचा की फोटो सीएम के साथ दिखाकर कहता मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। प्राप्त जानकारी के अनुसार नूतन कालेज की एमकाम की छात्रा को फिनटेक ऐडू मेटो प्लाजा में कांउसलर का कार्य करने वाली छात्रा के साथ वहा काम करने वाले सत्यम त्रिपाठी ने केबिन में आकर बुरी नियत से मुहं दबाकर छेड़छाड़ की और धमकी देतें हुए कहा कि किसी को बताया तो जान से मार दूंगा। नूतन कॉलेज की एमकॉम की छात्रा को फिनटेक एडू मेटो प्लाजा जो कंपनी में काउंसलर के रूप में कार्यरत है, काम करते समय सत्यम त्रिपाठी नामक व्यक्ति ने केबिन में आकर छेड़छाड़ की और जान से मारने की धमकी दी। धमकी देते हए सत्यम त्रिपाठी ने कहां की मेरे चाचा पत्रकार है और मेरे बहुत संबंध हैं मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकतें और चाचा की मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ फोटो दिखाकर मानसिक दबाव बनाया।

भारत में चुनाव को प्रभावित कर सकता है चीन

माइक्रोसॉफ्ट ने चेताया, कहा-एआई के जरिए वोटर्स को भटकाने की तैयारी

बीजिंग/वॉशिंगटन (एजेंसी)। टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने चेतावनी दी है कि चीन भारत में होने वाले लोकसभा चुनाव में रुकावट डालने की कोशिश करेगा। चीन ने ऐसा ही कुछ जनवरी में ताइवान में हुए चुनाव में भी किया था। माइक्रोसॉफ्ट की थ्रेट इंटेलीजेंस टीम ने कहा कि चीन आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के जरिए वोटरों का पॉलिटिकल पार्टियों की तरफ झुकाव बदलने या उन्हें भटकाने करने की कोशिश करेगा। वह सोशल मीडिया पर ऐसा कंटेंट पोस्ट करेगा, जिससे चुनावों के दौरान जनता की राय चीन के पक्ष में हो सके। बॉर्डर विवाद के चलते भारत में पड़ोसी देश के तौर पर चीन की छवि अच्छी नहीं है। चीन पोस्ट के जरिए छवि बदलने की कोशिश करेगा। थ्रेट इंटेलीजेंस टीम के मुताबिक, चीन समर्थित साइबर ग्रुप्स नॉर्थ कोरिया के साथ मिलकर 2024 में होने वाले कई देशों के चुनावों को निशाना बनाने वाले हैं। चीन यही हथकंडा अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में भी इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा है। भारत में लोकसभा की 543 सीटों के लिए चुनाव सात फेज में होगा। पहले फेज की वोटिंग 19 अप्रैल को और आखिरी फेज की वोटिंग 1 जून को होगी। 4 जून को नतीजे आएंगे।

2024 दुनिया के लोकतांत्रिक इतिहास का सबसे अहम साल साबित होने जा रहा है। इस साल 63 देशों (और यूरोपीय यूनियन) में राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव होंगे। दुनिया की कुल आबादी का 49 फीसदी हिस्सा वोटिंग राइट्स का इस्तेमाल करेगा। माइक्रोसॉफ्ट ने अपने बयान में कहा, इस साल दुनिया भर में, विशेष रूप से भारत, दक्षिण कोरिया और अमेरिका में चुनाव होने वाले हैं। हमारा आंकलन है कि चीन अपने हितों को फायदा पहुंचाने वाला एआई जनरेटेड कंटेंट बनाएगा और लोगों तक इसे पहुंचाएगा। ब्रिटिश मीडिया द गार्जियन ने रिपोर्ट में लिखा कि माइक्रोसॉफ्ट ने चेतावनी दी है कि चीन की इस हरकत का प्रभाव आने वाले समय में बढ़ेगा। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा, एआई जनरेटेड कंटेंट का तुरंत प्रभाव तो कम नजर आएगा, लेकिन चीन जिस तरह इस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बढ़ा रहा है, उससे इसका असर आगे ज्यादा प्रभावी हो सकता है। टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि ताइवान के चुनाव को प्रभावित करने के लिए चीन ने एआई के जरिए गलत जानकारियां सोशल मीडिया पर शेयर की थीं।

पेंडिंग केसों और फैसलों पर कमेंट से परेशान सीजेआई

वकीलों के सीजेआई चन्द्रचूड़ बोले-आप आम आदमी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने कहा है कि न्यायपालिका के कंधे मजबूत हैं और वह प्रशंसा के साथ-साथ आलोचना भी सह सकता है, लेकिन लंबित मामलों या फैसलों पर हाल के दिनों में वकीलों की टिप्पणी बहुत परेशान करने वाली है। उन्होंने कहा कि बार के पदाधिकारियों और सदस्यों को न्यायिक फैसलों पर प्रतिक्रिया करते समय यह नहीं भूलना चाहिए कि वे अदालत के अधिकारी हैं, आम आदमी नहीं। सीजेआई शुक्रवार को हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ऑफ नागपुर के शताब्दी वर्ष समारोह में बोल रहे थे। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि न्यायपालिका बार-बार अपनी स्वतंत्रता और गैर-पक्षपातपूर्णता पर जोर देने के लिए आगे आई है। उन्होंने कहा, हालांकि, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि न्यायपालिका और बार की आजादी के बीच घनिष्ठ संबंध है। सीजेआई ने कहा कि एक संस्था के रूप में बार न्यायिक स्वतंत्रता, संवैधानिक मूल्यों और अदालत की गरिमा को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। चंद्रचूड़ ने कहा कि भारत जैसे जीवंत और तर्कशील लोकतंत्र में अधिकतर व्यक्तियों की राजनीतिक विचारधारा या झुकाव होता है। अरस्तू के शब्दों में मनुष्य राजनीतिक प्राणी हैं। वकील भी कोई अपवाद नहीं हैं। उन्होंने कहा, हालांकि, बार के सदस्यों के लिए किसी का सर्वोच्च हित पक्षपातपूर्ण हितों के साथ नहीं बल्कि अदालत और संविधान के साथ होना चाहिए। सीजेआई ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठों के फैसले सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता की परिणति हैं।

परिक्रमा

न्याय पत्र बनाम संकल्प पत्र को लेकर भिड़ती कांग्रेस व भाजपा

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

जहां एक ओर मध्यप्रदेश में आईएनडीआईए के महागठबंधन को मध्यप्रदेश के खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में धीरे से जोर का झटका लगा है और उसकी उम्मीदवार जो समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी थीं का नामांकन पत्र निरस्त होने के साथ मीरा यादव चुनावी मैदान से बाहर हो गयी हैं, तो वहीं दूसरी ओर पांच न्याय और पच्चीस वायदों की गारंटी पर आधारित कांग्रेस के न्याय-पत्र जिसे पार्टी का घोषणापत्र माना जा रहा है को लेकर कांग्रेस पर तीखा शाब्दिक हमला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। उन्होंने राजस्थान के चुरु की सभा में कहा कि हम घोषणा पत्र नहीं संकल्प पत्र लाते हैं और उसे पूरा करते हैं। उनका कहना था कि नीयत सही रहे तो नतीजे भी आते हैं। भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र को झूठ का पुलिंदा निरुपित करते हुए कहा है कि चार पीढ़ियों के शासन के बाद कांग्रेस अब कमाल दिखाने का दावा कर रही है। इस प्रकार अब आने वाले दिनों में जैसे-जैसे चुनावी रंगत चढ़ती जायेगी वैसे-वैसे एक-दूसरे पर पूरी तरह से बढ़त लेने की हर संभव कोशिश आईएनडीआईए महागठबंधन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में एनडीए गठबंधन करेंगे, और इसमें देखने वाली बात यही होगी कि शाब्दिक शिष्टाचार व मर्यादा की सीमारेखा कितनी तार-तार होती है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी तथा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की उपस्थिति में जारी घोषणापत्र जिसे न्याय -पत्र नाम दिया गया है, उसमें पांच न्याय किसान, महिला, युवा, श्रमिक और हिस्सेदारी तथा 25 गारंटियों पर जोर दिया गया है। इनमें दिहाड़ी मजदूरों को कम से कम 400 रुपये प्रतिदिन मजदूरी देने, गरीब महिलाओं को सालाना एक लाख रुपये देने, जातिगत जनगणना कराने और एमएसपी को कानून बनाने जैसे वायदे किये गये हैं। भूमिहीनों को जमीन देने, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग के लिए आरक्षरण पर लगी 50 प्रतिशत की सीमा को समाप्त करने, आर्थिक रुप से पिछड़े लोगों को 10 प्रतिशत आरक्षण बिना भेदभाव सभी जाति-समूहों के लिए लागू करने और एसटी, एससी और ओबीसी के सभी रिक्त पद एक साल में भरने का वायदा किया गया है। कांग्रेस ने अपने न्याय -पत्र में सबसे ज्यादा वायदे युवाओं से किये हैं और ये भी वायदा किया है कि अग्निपथ योजना खत्म कर देंगे, 25 लाख रुपये का हेल्थ इंश्योरेंस देंगे तथा स्टार्टअप के लिए फंड दिलायेंगे ताकि 40 वर्ष से कम उम्र के लोग अपना कारोबार चालू कर सकें। सर्वाधिक 25 वायदे युवाओं से किये गये हैं।

एक ओर जहां प्रधानंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा के लिए 370 और सहयोगियों को मिलाकर 400 से अधिक लोकसभा सीटें जीतने का नारा दिया है वहीं दूसरी उसके जबाब में फिलहाल कांग्रेस के चुनावी वायदे 340 पार हो गये हैं। कांग्रेस जिन पांच न्याय और 25 वायदों की गारंटियों के भरोसे लोकसभा चुनाव

में बाजी मारने की कोशिश कर रही है उनमें प्रमुख वायदे इस प्रकार हैं- नौकरी, सामाजिक न्याय, युवा महिला व किसान-मजदूर बने धुरी, युवाओं को 30 लाख नौकरियां व 25 वर्ष तक के युवाओं को प्रतिवर्ष एक लाख देने का वायदा, केंद्रीय नौकरियों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण, हर गरीब परिवार की एक महिला सदस्य को सालाना एक लाख नगद देने की घोषणा, देश में सभी के लिये 25 लाख का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा देने का ऐलान, जातिगत जनगणना कराने और किसानों को एमएसपी की कानूनी गारंटी देने का वायदा, भाजपा-राजग के 10 वर्ष के शासन के दौरान पारित विवादित कानूनों की समीक्षा, नोटबंदी, चुनावी बांड, पेगासस, राफेल जैसे मामलों में भ्रष्टाचार की जांच का ऐलान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समीक्षा, वर्तमान मणिपुर सरकार को हटाया जाना, महिला आरक्षण को 2029 से नहीं 2025 से ही अमल में लाने, जम्मू कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करना व दिल्ली के एलजी की शक्तियां कम करना तथा पुडुचेरी को नया राज्य बनाना आदि शामिल हैं।

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र को झूठ का पुलिंदा करार देते हुए कहा कि चार पीढ़ियों के शासन के बाद कांग्रेस अब सत्ता में आने के लिए कमाल दिखाने का दावा कर रही है। घोषणापत्र को न्याय-पत्र नाम देने पर त्रिवेदी ने कहा कि एक तरह से कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया है कि सीधे तौर पर देश में लगभग 60 साल तक शासन के दौरान उन्होंने न्याय नहीं किया। भाजपा ने घोषणा पत्र में न्यूयार्क और थाईलैंड की तस्वीरों को लेकर भी कांग्रेस पर निशाना साधा। जिसने कभी भी भारत के युवाओं की क्षमता, आर्थिक क्षमता व सैन्य क्षमता, औद्योगिक क्षमता एवं सुरक्षा के साथ न्याय नहीं किया वह कांग्रेस आज न्याय की बात कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी फौज न्याय के मैदान में जंग जीतकर आती थी और उसे राजनीतिक टेबल पर सरकार लुटा कर चली जाती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने कभी भी भारत की सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता के साथ न्याय नहीं किया और वेष बदल कर जनता को बरगलाने की कोशिश कर रही है।

नामांकन पत्र निरस्त होने पर तकरार

खजुराहो लोकसभा क्षेत्र इन दिनों पूरे प्रदेश में ही नहीं अपितु देश में अनायास ही चर्चित हो उठा और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सांसद विष्णु दत्त शर्मा के लिये चुनावी लड़ाई एकतरफा और आसान उस समय हो गयी जब जिला निर्वाचन अधिकारी सुरेश कुमार ने आईएनडीआईए महागठबंधन की सपा प्रत्याशी मीरा यादव का नामांकन पत्र निरस्त कर दिया। इसका कारण यह बताया गया है कि नामांकन पत्र में एक स्थान पर अभ्यार्थी के हस्ताक्षर नहीं है और नई मतदाता सूची की सत्यापित प्रति संलग्न नहीं की गयी है। नामांकन पत्र इसी आधार पर निरस्त कर दिया गया। चूंकि मीरा यादव खजुराहो संसदीय क्षेत्र की मतदाता नहीं है इसलिए जहां की मतदाता सूची में उनका नाम है वहां के सक्षम अधिकारी से सत्यापित कराकर नई सूची जमा करना थी। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश की 29 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस 28 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, खजुराहो सीट उसने समाजवादी पार्टी के लिए छोड़ दी थी। यहां से प्रत्याशी को लेकर लगता है समाजवादी पार्टी उहापोह में रही। पहले उसने खजुराहो से डा. मनोज यादव को अपना उम्मीदवार बनाया था उसके बाद उनके स्थान पर मीरा यादव को प्रत्याशी घोषित किया गया। पांच अप्रैल यानी शुक्रवार को नामांकन पत्र की जांच हुई जिसमें सपा उम्मीदवार मीरा यादव का नामांकन पत्र अपूर्ण होने के कारण निरस्त कर दिया गया। मीरा यादव के पति दीप नारायण यादव ने कहा कि काफी समय था निर्वाचन अधिकारी हमें बता देते तो हम कमी की पूर्ति कर देते, अब हम चुनाव आयोग और अदालत का दरवाजा खटखटायेंगे। मीरा यादव का नामांकन निरस्त होने को लेकर यह भी चर्चा चल रही है कि क्या मीरा ने खुद ही अपना पर्चा खारिज करने की तैयारी तो नहीं कर ली थी।

और यह भी.....!

मीरा यादव का नामांकन निरस्त होने से इंडिया गठबंधन के नेता आगबबूला हैं और वे तरह-तरह के आरोप लगा रहे हैं। मध्यप्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन का इस मामले में कहना है कि बाकी उम्मीदवार चार से पांच सेट में नामांकन भर रहे हैं लेकिल सपा उम्मीदवार ने एक ही सेट दिया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने एक दिन पहले ही मीरा यादव से कहा था कि एक जगह पर उनके हस्ताक्षर नहीं हैं, मीरा यादव यह कहकर चली गई हैं कि बाहर मीडिया से बात करके लौटती हूं और वे वापस नहीं आईं। मीरा के पति दीप नारायण यादव कह रहे हैं कि अभी 15 उम्मीदवार और हैं और कांग्रेस से चर्चा करने के बाद किसी को समर्थन दे दिया जायेगा। उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारी पर आरोप लगाया है कि अनपढ़ उम्मीदवार है तो उसके फार्म को दुरुस्त कराने की जिम्मेदारी निर्वाचन अधिकारी की है लेकिन उसने कोई मदद नहीं की। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव का आरोप है कि सरेआम लोकतंत्र की हत्या की गयी। हस्ताक्षर नहीं थे तो फिर देखने वाले अधिकारी ने फार्म लिया ही क्यों। पूर्व केंद्रीय मंत्री कांग्रेस नेता अरुण यादव को लगता है कि यह एक सुनियोजित साजिश थी और भाजपा प्रत्याशी विष्णुदत्त शर्मा के दबाव में यह हुआ है और यह राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में आता है। मध्यप्रदेश में ऐसी घटना पहली बार नहीं हुई है बल्कि इससे पहले 2009 में भी ऐसी ही स्थिति उस समय निर्मित हुई थी जब भाजपा नेता सुषमा स्वराज के सामने विदिशा में राजकुमार पटेल को कांग्रेस प्रत्याशी बनाया गया, पटेल भी बी-फार्म की मूलप्रति नहीं जमा कर पाये थे इसलिए तकनीकी कारणों से उनका नामांकन पत्र निरस्त हो गया था।

इंदौर के प्राइवेट कॉलेज में छात्रों के दो गुट भिड़े

कुर्सियां और डस्टबिन फेंके, एक छात्र का सिर फटा; विरोध के बाद आज का इवेंट रद्द

इंदौर (नप्र)। इंदौर के प्रेस्टीज कॉलेज में शुक्रवार रात छात्रों के बीच दो पक्षों में जमकर मारपीट हो गई। इसका वीडियो शनिवार को सामने आया है। मारपीट के चलते दो घायल हो गए। इनमें से एक छात्र की हालत गंभीर है। उसका सिर फट गया। अन्य छात्रों को चोटें आने की सूचना है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इधर, विवाद के बाद शनिवार दोपहर अभाविप ने ज्ञापन देने का ऐलान किया है। बड़ी संख्या में कार्यकर्ता कॉलेज पहुंचे और प्रदर्शन किया। इसके बाद 4 से 6 अप्रैल तक चलने वाले इस कार्यक्रम के आखिरी दिन का इवेंट रद्द करने की जानकारी दी गई। खजराना टीआई सुजीत श्रीवास्तव ने बताया कि छात्रों के बीच मारपीट मामले में 4 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। मामले में जांच की जा रही है। जैसे-जैसे अन्य की पहचान होगी। आरोपियों की संख्या बढ़ जाएगी। बताया जा रहा है कि लाभ गंगा गार्डन में प्रेस्टीज कॉलेज का मंथन नाम से इवेंट हुआ था। इवेंट में कॉलेज के अंडर ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्सेस के सभी छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

छात्रों ने बाकायदा पास भी दिए गए थे, लेकिन बाहरी लोग भी आ गए। इससे विवाद हो गया। कुर्सियां फेंकी गई, डस्टबिन तोड़फोड़ दिए गए। वहां पर कॉलेज की कई फैकल्टीज मौजूद थीं। उनके सामने हंगामा होता रहा। रात तक छात्र एक-दूसरे पर आरोप लगाते रहे और झगड़ते रहे। आदित्यसिंह नामक छात्र की आंख में और छवि यादव को सिर पर गंभीर चोट आई बताई है। दोनों अस्पताल में भर्ती किए गए हैं। विवाद की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और इवेंट बंद करवाया। पुलिस आरोपियों को पकड़ती लेकिन उसके पहले सभी आरोपी भाग निकले।

कहासुनी से हुई विवाद की शुरुआत- मारपीट की शुरुआत मामूली कहासुनी को लेकर हुई। आरोपी छात्रों ने लोहे के डस्टबीन मार-मार कर छात्रों को घायल कर दिया।

इंदौर-उज्जैन बेल्ट में कांग्रेस से एक भी महिला उम्मीदवार नहीं

20 साल बाद फिर वही हालात बने

इंदौर (नप्र)। खंडवा का टिकट तय होते ही मालवा-निमाड़ की 8 लोकसभा सीटों की तस्वीर साफ हो गई। पार्टी ने शनिवार दोपहर मालवा-निमाड़ का आखिरी बचा टिकट खंडवा से नरेंद्र पटेल को दिया है। इसी के साथ साफ हो गया कि इंदौर-उज्जैन संभाग में कांग्रेस महिला लीडरशिप के संकट से जूझ रही है। यहां एक भी महिला को नहीं बनाया है। दूसरी तरफ, भाजपा ने 8 सीटों में से दो पर महिला को टिकट दिए हैं। इनमें धार-महू सीट से सावित्री ठाकुर और झाबुआ-आलीराजपुर-रतलाम सीट से मंत्री की पत्नी अनीता नागर सिंह चौहान शामिल हैं।इंदौर-उज्जैन संभाग में मालवा-निमाड़ की इंदौर, उज्जैन-आलोट, देवास-शाजापुर, धार-महू, झाबुआ-रतलाम, खरगोन-बड़वानी, खंडवा-बुरहानपुर, मंदसौर-नीमच सीटें आती हैं।

भाजपा-कांग्रेस में 20 साल बाद फिर ऐसे हालात

मालवा-निमाड़ में टिकट वितरण को लेकर अजीब संयोग बना है। 20 साल पहले 2004 में कांग्रेस और भाजपा ने मालवा-निमाड़ में इसी तरह का टिकट वितरण किया था। तब भी कांग्रेस ने किसी महिला को टिकट नहीं दिया था जबकि भाजपा ने दो टिकट इंदौर से सुमित्रा महाजन और झाबुआ से रेलम चौहान को चेहरा बनाया था। दोनों पार्टियों को महिला अनुपात 0-2 था, इस बार भी यही है। कांग्रेस से मात्र एक टिकट, भाजपा से 6 चेहरेमध्य प्रदेश स्तर पर देखें तो इस बार कांग्रेस ने पूरे प्रदेश में मात्र 1 महिला चेहरा उतारा है। वे हैं- सेमरिया विधायक अभय मिश्रा की पत्नी नीलम, जो रीवा लोकसभा सीट से उम्मीदवार हैं। पिछली बार पार्टी ने 4 महिलाओं को टिकट दिया था।भाजपा ने इस बार 6 महिलाओं को टिकट दिए हैं। इनमें भिंड, सागर, धार, झाबुआ-रतलाम, बालाघाट और शहडोल की सीटें शामिल हैं। 2019 में पार्टी ने 3 ही टिकट दिए थे, यानी इस बार महिलाओं का लगभग डबल कर दिया है। यहीं नहीं, भाजपा ने मध्य प्रदेश से ही कविता पाटीदार और सुमित्रा वाल्मीकि को पहले ही राज्यसभा सदस्य बनाया जा चुका है।

क्षेत्र की इकलौती महिला कैंडिडेट का टिकट काटा

जमुना देवी के बाद संसद में मालवा-निमाड़ की आवाज उठाने के लिए कांग्रेस के पास मीनाक्षी नटराजन एकमात्र चेहरा बनीं थीं। 2009 में पहला चुनाव लड़ा और जीतीं। राहुल गांधी की गुडलिस्ट में थीं।2014 और 2019 में फिर टिकट मिला लेकिन हार गईं। इस बार टिकट कट गया है।

इंदौर सीट पर कांग्रेस की महिला प्रभारी भी नाराज- महिला कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष शोभा ओझा ने कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को संदेश भेजा था। सोशल मीडिया पर वायरल संदेश में उन्होंने पारिवारिक कारण का हवाला देते हुए आने वाले कुछ सप्ताह तक पार्टी के कामों के लिए समय नहीं दे पाने की बात लिखी है। ओझा की नाराजगी के पीछे वजह पार्टी के कार्यकर्ताओं की टिप्पणी से आहत होना माना जा रहा है। शोभा ओझा के साथ सत्यनारायण पटेल को इंदौर लोकसभा सीट का प्रभारी बनाया था। पटेल भी उत्तर प्रदेश में अपनी व्यस्तता का हवाला देकर इंदौर में समय न दे सकने की बात कह चुके हैं। कांग्रेस ने आगर के पूर्व विधायक विपिन वानखेड़े को इंदौर लोकसभा सीट के लिए हाल ही में सह-प्रभारी बनाया है। अब पूरा जिम्मा उन्हें के ऊपर आ गया है।

इंदौर में युवक पर एसिड अटैक

पुलिस ने आरोपी जीजा के खिलाफ दर्ज किया केस

इंदौर (नप्र)। एक युवक पर एसिड डालने का मामला सामने आया है। शिकायत पर पुलिस ने आरोपी जीजा के खिलाफ केस दर्ज किया है। मामले में जांच की जा रही है। जीजा ने ऐसा क्यों किया, इसके कारणों का पता लगाया जा रहा है।राऊ थाना पुलिस ने आरोपी राजेश सोलंकी निवासी बाडी मोहल्ला के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोप है कि मनोज पिता शिवनारायण मालवीय उम्र 42 साल निवासी बलाई मोहल्ला जूनी इन्दौर मां उमिया सर्विस सेंटर राऊ में काम कर रहा था। काम करते समय पीछे से जीजा राजेश सोलंकी ने मनोज पर एसिड डाल दिया। जिससे वो घायल हो गया। इलाज के लिए दुकान मालिक राजेश पाटीदार उसे अस्पताल लेकर पहुंचे। शिकायत पर पुलिस ने आरोपी जीजा राजेश पर धारा 326 बी में केस दर्ज किया।

इंदौर में 48 साल की महिला को से छेड़छाड़

पीड़ित महिला की शिकायत पर आरोपी युवक पर पुलिस ने दर्ज किया केस

इंदौर (नप्र)। एक 48 साल की महिला को धमकाने का मामला सामने आया है। आरोपी महिला पर बात करने के लिए दबाव बनाता था। महिला का पीछा करता था। परेशान होकर महिला थाने पहुंची और केस दर्ज करवाया।एरोड्रम थाना पुलिस ने 48 साल की पीड़िता की शिकायत पर आरोपी विवेक शर्मा निवासी दुर्गा नगर के खिलाफ धारा 354घ और 507 में केस दर्ज किया है। आरोपी के द्वारा महिला का बार-बार पीछा किया जाता है। आरोपी महिला को फोन पर धमकी देता था। बात करने के लिए दबाव बनाता था। बात नहीं करने पर जान से मारने की धमकी देता था। महिला की शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर मामले में जांच शुरू कर दी है।

निगम कमिश्नर पहुंचे राजकुमार सब्जी मंडी और विश्राम बाग

मंडी व्यापारियों ने कमिश्नर को बताई समस्या, विश्राम बाग में सिक्योरिटी गार्ड लगाने के निर्देश

इंदौर (नप्र)। नगर निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने शनिवार को राजकुमार ब्रिज के नीचे स्थित सब्जी मंडी और विश्राम बाग का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने निरीक्षण के दौरान

व्यापारियों से चर्चा की और उनसे सुविधाएं और समस्या सुनते हुए, गर्मी के दौरान पीने के पानी, छाया आदि की व्यवस्था करने के संबंध में निर्देश दिए।कमिश्नर ने रणजीत हनुमान रोड स्थित विश्राम बाग का निरीक्षण भी किया। विश्राम बाग में निर्माणाधीन स्विमिंग पूल में पानी भरा होने पर दुर्घटना की संभावना को देखते हुए सुरक्षा के लिए चारों तरफ बैरिकेडिंग नहीं होने पर नाराजगी जाहिर कर बैरिकेडिंग लगाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने विश्राम बाग के संचालन और संधारण के लिए कमेटी का गठन करने के संबंध में भी चर्चा की। कमिश्नर ने विश्राम बाग की सुरक्षा को देखते हुए सिक्योरिटी गार्ड लगाने के भी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए।

अफसर बनने इंदौर आया था डबल मर्डर का आरोपी

परिवार ने कहा- जिस लड़की को मारा वो हमारे घर आती रहती थी

इंदौर (नप्र)। इंदौर में गुरुवार को अपनी दोस्त स्नेहा और उसके परिचित दीपक की गोली मारकर खुद सुसाइड करने वाला अभिषेक के परिवार का दावा है कि स्नेहा का घर पर आना-जाना लगा रहता था। दोनों साथ में घूमते थे। कई बार वे शहर से बाहर घूमने के लिए ट्रिप पर साथ में ही जाते थे। यह बात परिवार को भी मालूम है। शुक्रवार को रेहटी गांव (सीहोर जिला) में उसका अंतिम संस्कार किया गया है।सीहोर के ग्राम रेहटी का रहने वाला अभिषेक काफी शांत स्वभाव का था। वह यहां अफसर बनने आया था। अभिषेक के घर के सामने किराने की दुकान चलाने वाले दुकानदार

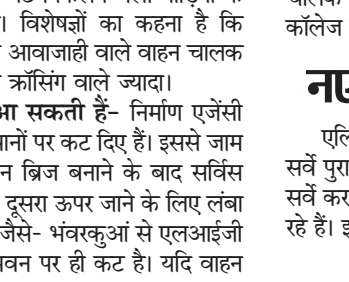

आरोपी- अभिषेक यादव

ने बताया कि वह वह बहुत सीधा लड़का था। दुकान पर सामान लेने आता पर कभी गलत बात नहीं की। थोड़ी बहुत हंसी मजाक भी कर लेता। उन्हें कल पता चला कि अभिषेक ने इस तरह का कांड कर दिया तो यकीन ही नहीं हुआ।वहीं अभिषेक के घर के पड़ोस में रहने वाली एक महिला ने बताया कि अभिषेक घर के बाहर कम ही दिखाई देता था। वह कॉलोनी में ना के बराबर रूकता। उसे कॉलेज आते-जाते ही देखने में आता था। स्वभाव से काफी शांत था। वह घर से भी कम बाहर निकालता।

आसपास में भी उसकी दोस्ती कम थी।अभिषेक के भाई दुर्गेश ने बताया कि चचेरे भाइयों से उसकी बातचीत कम ही होती थी। अचानक वह इस तरह का कदम उठा लेगा। किसी को पता नहीं था। अभिषेक से घटना के दिन बाद नहीं हुई। वह घर से कॉलेज जाने का कहकर ही निकला था। अभिषेक इंदौर में अफसर बनने आया था। वह प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था। उसका रूटीन फिक्स था। दिन में पढाई करने के बाद शाम को जिम जाना इसके बाद थोड़ा बहुत कॉलोनी में घूमना। उसने यहां दोस्त कम बनाए।

इंदौर में भंवरकुआं से एलआईजी एलिवेटेड-कॉरिडोर के लिए नया सर्वे

चौराहा की क्रॉसिंग पर ट्रैफिक ज्यादा; सीधे आने-जाने वाले 15 प्रतिशत भी नहीं

इंदौर (नप्र)। बीआरटीएस कॉरिडोर के बॉटलनेक हिस्से पर बन रहा एलिवेटेड कॉरिडोर सर्वे में ट्रैफिक फंसता नजर आ रहा है। सरकार के निर्देश पर प्रशासन द्वारा नया सर्वे हुआ। इस सर्वे से खुलासा हुआ कि एलआईजी और एमआर-9 से नौलखा-भंवरकुआं तक 15.4 फीसदी गाड़ियां सीधे जाती हैं। भंवरकुआं से एलआईजी की ओर आने वाली गाड़ियां मात्र 4.9 फीसदी हैं। जबकि बीआरटीएस का उपयोग सबसे ज्यादा अन्य रूट पर पहुंचने के लिए होता है। पूर्व में जो सर्वे किया गया था वह यह

मानकर किया गया था कि 40 फीसदी ट्रैफिक इसी से जाएगा।सर्वे के अनुसार बीआरटीएस पर पीक समय में प्रति घंटे 2.4 लाख गाड़ियां निकलती हैं। यह ट्रैफिक भंवरकुआं, नौलखा से एलआईजी या इससे विपरीत दिशा में सीधा नहीं आ रहा है। 60 से 70 फीसदी गाड़ियां बॉटलनेक के चौराहों और क्रॉस सड़कों से आवाजाही करती हैं।यह सर्वे ट्रैफिक कंसल्टेंट समूह ने सुबह 7 से 11 और शाम 5 से 9 बजे के बीच प्रति घंटे निकलने वली गाड़ियों के आधार पर किया है। विशेषज्ञों का कहना है कि बीआरटीएस पर सीधे आवाजाही वाले वाहन चालक बहुत कम हैं। जबकि क्रॉसिंग वाले ज्यादा।

ये परेशानियां आ सकती हैं- निर्माण एजेंसी पीडब्ल्यूडी ने तीन स्थानों पर कट दिए हैं। इससे जाम बढ़ेगा। क्योंकि टू लेन ब्रिज बनाने के बाद सर्विस रोड पर वाहन फंसेंगे। दूसरा ऊपर जाने के लिए लंबा घूम कर आना होगा। जैसे- भंवरकुआं से एलआईजी की ओर सिर्फ गीताभवन पर ही कट है। यदि वाहन चालक को शिवाजी वाटिका पर उतरना है तो उसे मधुमिलन चौराहा घूम कर आना होगा। वहीं एलआईजी से गीताभवन की ओर आने वाले वाहन चालक को गीताभवन चौराहा आने के लिए कृषि कॉलेज चौराहा घूम कर आना होगा।

नए सर्वे पर निर्णय लेंगे

एलिवेटेड ब्रिज के लिए किया गया फिजिबिलिटी सर्वे पुराना हो गया था। वर्तमान स्थिति को देखते हुए सर्वे कराया गया है। इसके परिणामों का अध्ययन कर रहे हैं। इसी आधार पर निर्णय लिया जाएगा।

-आशीष सिंह, कलेक्टर

पुस्तक समीक्षा
हरि जोशी
समीक्षक

विसंगतियों पर रोचक कटाक्ष है, फटे में टांग

हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, लक्ष्मीकांत वैष्णव, अजातशत्रु,ज्ञान चतुर्वेदी जैसे व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षरों को पढ़ते रहने के बाद ये बात समझ आई कि व्यंग्य रचना में दो चार पंक्तियाँ या पैरेग्राफ ही उसे चुटीला और यादगार बनाती है जबकि कहानी बहुत विस्तार मांगती है। कुछ पंक्तियों की धार ही व्यंग्य को व्यंग्य बनाती है। वन लाइनर पंच।

'फटे में टांग' व्यंग्यकार मोहन वर्मा का ताज़ा व्यंग्य संग्रह है जो बोधि प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित हुआ है जिसमें उनके विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित 45 व्यंग्य संग्रहित हैं। इन व्यंग्यों को पढ़कर लगा कि मोहन वर्मा नें न सिर्फ फटे में टांग डाली है बल्कि अपने आसपास की दुनिया, परिवेश विडम्बनाओं, विद्रूपताओं, असमानताओं, असंवेदनशीलता,और अपने आसपास बिखरी विसंगतियों को असहमति की लात मारी हैं। साहित्य की किसी भी विधा में लेखक जब संवेदना के स्तर पर व्यवस्था से असहमत होता है तो कलम से निकली रचना खुद ब खुद बोलती है। मोहन वर्मा अपनी रचनाओं में व्यवस्था पर सिर्फ व्यंग्य ही नहीं करते बल्कि कई दफा वे सुझाव भी देते है और ये सुझाव बदलाव की अपेक्षाओं से सराबोर दिखाई देते हैं। ये व्यंग्य जीवन की रोजमर्रा की छोटी छोटी घटनाओं और अनुभवों के कटाक्ष भरे विवरणों को व्यंग्य में लपेटकर पाठकों के सामने रखते है।

महानगरों से लेकर छोटे छोटे कस्बों के साहित्य की अपनीराजनीति होती है जिसे 'किस्सा तोता मैना' में अच्छे से लपेटा गया है। ' तू मेरी पीठ खुजा,मैं तेरी पीठ खुजालूँ' तू मुझे बुला मैं तुझे बुलालूँ के फार्मूले के साथ कस्बे के भारत भवन बन जाने का अच्छा वर्णन है। सोशल मीडिया के इस समय में 'साहित्य शिरोमणी बैचेनजी'के जरिये छुटभैये साहित्यकारों(?) की सम्मान के लिए छटपटाहट व्यंग्य गुदगुदाता है। मोहन वर्मा ने अपने व्यंग्यों में छर्रे और गरम केट्लियों का विषयानुकूल उपयोग किया है जो व्यंग्य को और धारदार बनाता है। 'नेताजी की घोडी' हो या फिर 'जिनकी तूती बोलती है' ऐसे व्यंग्य है जो रुतबे के सामाजिक प्रभाव की परतें खोलते हैं।

विविधरंगी इन व्यंग्यों में कोरोना काल के बाद शादी में खाना खाने का आनंद लेते लोगों पर 'शादी हो रई है खाना खाने का' हो या फिर पर्यावरण दिवस पर दिखावे का असली चेहरा दिखाता व्यंग्य 'पर्यावरण दिवस चिंता और चिंतन'हो, राजनीति में आयाराम गयाराम को लेकर 'लौट के बुद्धू घर को आये'हो या दोनों हाथों में लड्डू की कामना वालों पर कटाक्ष हो, हर व्यंग्य में ताजगी के साथ तीखापन है।

व्यंग्यकार ने 'भीड़ में गुम आम आदमी' व्यंग्य के जरिये आम आदमी की पीड़ा को शब्दों में उकेरा है तो इन्दौरी चटोरेपन पर भी कलम चलाई है।वर्तमान में पार्षद पति, महापौर पति, या मुख्यमंत्री पत्नी का जो चलन चला है उसपर 'विकास करेंगें भिया' व्यंग्य एक अच्छा तंज है। 'माँ मैंने बी ए पास कर लिया है' स्वर्णिम समय पर एक रोचक रचना है। ऐसा ही एक और रोचक व्यंग्य है 'छोटे छोटे कस्बों का बड़ा बड़ा प्रेम'। राजनीति और सार्वजनिक जीवन में संस्थाओं में महत्वाकांशी लोगो पर लिखा व्यंग्य 'तराजू में मेढक तौलना' भी रोचक है।

जैसा कि यह सर्वमान्य सत्य है कि व्यंग्य की जान कुछ ख़ास पंक्तियाँ ही होती है मोहन वर्मा के अलग अलग व्यंग्यों में ये ख़ास पंक्तियाँ बार बार उभरकर आई। व्यंग्यों में निहित सन्देश भी मारक है जैसे 'टोपीबाज़ों से जरा बचके'या पागल नहीं है देश की चिंता करने वाले ।कुल जमा इन व्यंग्य आलेखों में अपने आसपास बिखरे विषयों पर प्रचलित कहावतों और मुहावरों के माध्यम से पैनी नज़र डाली गई है। हाँ कुछ विषयों और पंक्तियों को लेखक ने दोहराया भी है जिससे बचा जा सकता था। कहीं कहीं विषय को समेटने की जल्दबाजी भी नज़र आई। बहरहाल रचनाएँ रोचक,पठनीय,और मारक है।

सम्मान एवं अपनेपन के हकदार हैं बुजुर्ग

विचार
अनुराग मनीन्द्र
समीक्षक

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में भारत में बुजुर्गों की संख्या 14.9 करोड़ थी।2050 तक यह संख्या 34.7 करोड़, यानी दोगुने से भी अधिक होने का अनुमान है।जिस रफ्तार से बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, उसी रफ्तार से उनके प्रति उपेक्षा एवं बदसलूकी के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं।'हेल्पएज इंडिया' नामक एनजीओ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 47 प्रतिशत वृद्धजन अपने परिवारों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं।यहां ध्यान देने वाली बात है कि उन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार अधिक होता है, जो आर्थिक रूप से अपनी संतानों पर निर्भर होते हैं।

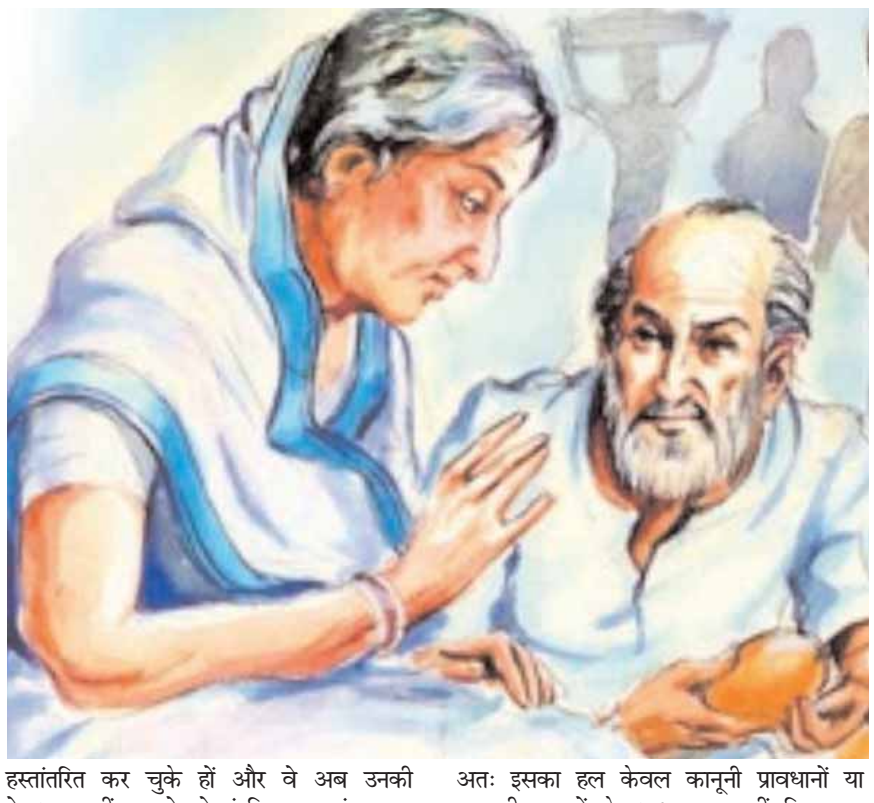

परिवार रूपी इमारत की नींव होते हैं बुजुर्ग ! आज के बदलते दौर में संयुक्त परिवार की अवधारणा खत्म-सी होती जा रही है एवं एकल परिवारों का चलन जोरों पर है। पति-पत्नी और बच्चे, बस हो गया परिवार पूरा ! ऐसे में घर के बुजुर्ग प्रायः एकाकी एवं उपेक्षित जीवन जीने को अभिशप्त हैं।

परिवार के साथ रहने वाले बुजुर्गों की स्थिति भी ज्यादतर मामलों में 'भीड़ में तन्हा' जैसी होती है।

वृद्धावस्था में प्रायः लोग शारीरिक एवं मानसिक तौर पे दुर्बल हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें पोषक आहार, बेहतर स्वस्थ्य सुविधाएं, उचित देखभाल के साथ-साथ शारीरिक एवं भावनात्मक सहारे की अधिक आवश्यकता होती है। बुजुर्ग चाहते हैं कि घर के अन्य सदस्य उनके साथ बैठें, उनकी बातें सुनें, उनके साथ समय बिताएं ; लेकिन प्रायः ऐसा नहीं हो पाता। ऐसे में वे अपनों के साथ रहकर भी एकाकी, हताश एवं उपेक्षित महसूस करते हैं।

ऐसा नहीं कि निम्न या मध्यमवर्गीय परिवारों में ही बुजुर्ग उपेक्षा के शिकार हैं। बहुत-से उच्च पदस्थ सेवानिवृत्त अधिकारी एवं किसी जमाने में समृद्धशाली रहे लोग भी कई वजहों से अपनी वृद्धावस्था में एकाकी एवं उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हैं।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में भारत में बुजुर्गों की संख्या 14.9 करोड़ थी। 2050 तक यह संख्या 34.7 करोड़, यानी दोगुने से भी अधिक होने का अनुमान है। जिस रफ्तार से बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, उसी रफ्तार से उनके प्रति उपेक्षा एवं बदसलूकी के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं।

'हेल्पएज इंडिया' नामक एनजीओ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 47 प्रतिशत वृद्धजन अपने परिवारों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं। यहां ध्यान देने वाली बात है कि उन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार अधिक होता है, जो आर्थिक रूप से अपनी संतानों पर निर्भर होते हैं।

बच्चों की खुशी एवं उनका जीवन संवारने के लिए माता-पिता अपनी सभी इच्छाओं का त्याग कर देते है, अपना सबकुछ न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं। अधिकतर मामलों में देखा गया है कि बुजुर्ग भावनावश अपने जीते जी अपनी सारी संपत्ति संतानों के नाम कर देते हैं ; और फिर वही बुजुर्ग अपने ही बच्चों के लिए 'बोझ' बन जाते हैं।

बुजुर्गों के लिए गरिमापूर्ण जीवन को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय कानून में कई तरह के प्रावधान हैं। जिनमें से एक MWPSC एक्ट-2007 है। इस कानून की खास बात ये है कि अगर बुजुर्ग अपनी संपत्ति बच्चों या रिश्तेदार के नाम

हस्तांतरित कर चुके हों और वे अब उनकी देखभाल नहीं कर रहे, तो संपत्ति का हस्तांतरण रद्द हो सकता है। यानी वह संपत्ति फिर से बुजुर्ग के नाम हो जाएगी। इसके अलावा, वैसे बुजुर्ग जो अपनी देखभाल करने में सक्षम नहीं हैं और उनके बच्चे उनका ध्यान नहीं रखते हैं, तो वे भरण-पोषण का दावा कर सकते हैं। उन्हें हर महीने 10 हजार रुपये तक का गुजारा-भत्ता मिल सकता है। साथ ही, भरण-पोषण के आदेश का पालन एक महीने के भीतर करना अनिवार्य है।

साल 2019 में इस एक्ट में कुछ संशोधन किए गए। इस संशोधन के तहत भरण-पोषण राशि की अधिकतम सीमा हटा दी गई है। अब भरण पोषण की राशि बच्चों की आय के आधार पर तय की जाएगी। साथ ही तय की गई राशि आदेश के 15 दिनों के भीतर देय होगी।

हालांकि, जानकारी के अभाव एवं लोक-लाज की वजह से ज्यादतर पीड़ित बुजुर्ग अपने बच्चों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने से हिचकते हैं।

बुजुर्गों की गिरती स्थिति सामाजिक के साथ-साथ पारिवारिक एवं भावनात्मक मुद्दा अधिक है, अतः इसका हल केवल कानूनी प्रावधानों या सरकारी प्रयासों के आधार पर नहीं किया जा सकता है ! इसके लिए परिवार के सदस्यों को चाहिए कि वे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार रखें।

अपने बुजुर्गों के साथ तालमेल बिठा पाने में नाकाम युवा अक्सर 'जेनरैशन गैप' का हवाला देते हैं। 'जेनरैशन गैप' की बात करने वाले आज के युवा यह भूल जाते हैं कि यही 'गैप' तब भी होगा, जब वे बूढ़े होंगे। अकेलापन झेल रहे बुजुर्ग और बढ़ते 'ओल्ड एज होम्स' बुजुर्गों के आज के साथ-साथ युवाओं के आने वाले कल की तरफ भी इशारा कर रहे हैं।ये सच है कि आज की दौड़ती-भागती जिंदगी में हर इंसान वक्त की कमी से जूझ रहा है। लेकिन यह भी सच है कि तमाम व्यस्तताओं के बीच घर के बुजुर्गों के लिए थोड़ा-सा वक्त तो निकाला ही जा सकता है !

बुजुर्गों को हमसे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए ! उन्हें चाहिए तो बस थोड़ा-सा सम्मान, थोड़ी-सी देखभाल, थोड़ा-सा अपनापन, थोड़ी-सी हमदर्दी, थोड़ा-सा प्यार।

अंतिम पड़ाव

(लघुकथा)
प्रभुनाथ शुक्ल
(बरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं समीक्षक)

बाबूजी की चिंता आखिर सच साबित हुई अम्मा जी उनका साथ छोड़ गई थीं। वह कैंसर की बीमारी से हार गई। बाबूजी की लाख कोशिश उन्हें नहीं बचा पाई। बाबूजी का जीवन अंतिम पड़ाव पर अकेला रह गया था। उनकी हालत जैसे रेगिस्तान में करील के पेड़ जैसे हो गई थी। कहने को उनके पास सब कुछ था लेकिन कुछ नहीं था।

अम्मा की तेरहवीं संस्कार के बाद सभी चारों बेटे अपने-अपने कार्यस्थल लौट गए थे। बड़ा बेटा अमेरिका, दूसरा दुबई और तीसरा सिंगापुर में शटल था जबकी चौथा मुंबई में था। जाते वक्त सभी बाबूजी के गले मिलकर खूब घड़ियाली आँसू रोए थे। सबने बाबूजी को दिलाशा दिया था कोई दिक्क़त होगी तो बाबूजी बताइएगा। अब बाबूजी के पास इससे बड़ी क्या दिक्कत होगी। लेकिन किसी ने बाबूजी से यह नहीं कहा था कि आप हम लोगों के साथ चलिए, यहाँ आप अम्मा के बगैर नहीं रह सकते हैं। लेकिन बेटों के लाख चाहने के बाद भी उनकी पत्नियां बाबूजी को साथ रखने को राजी नहीं थीं। क्योंकि उनके स्वतंत्र जीवन में बाबूजी सबसे बड़ी बाधा बनते।

चारों बेटों और बहुओं के जाने के बाद बेटी आज बेटी रेनू को लेने उसके पति आए थे। वह बाबूजी को इस हालत में छोड़कर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन ससुराल जाना उसकी भी मज़बूरी थीं। क्योंकि ससुराल में वह अकेली थीं और उसके सास -ससुर बूढ़े थे। जाते वक्त रेनू बाबूजी को लिपट कर फुट पड़ी थीं। रेनू को सबसे बड़ा दुःख यह था की बाबूजी आज अकेले रह गए हैं। अम्मा की सेवा में उन्होंने खुद का जीवन समर्पित कर दिया था। बाबूजी ने कभी अम्मा की कोई बात नहीं टाली। जीवन के अंतिम छड़ में मरते वक्त अम्मा ने बाबू का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा था।

भगवान मुझे कुछ मत देना लेकिन हर जन्म में मुझे आपका साथ मिले। मैं आपके ऋण से मुक्त नहीं हो पाऊंगा। आपका साथ मेरे अंतिम सांस तक मेरे हाथों में रहे... बस ! इसी शब्द के साथ अम्मा ने दुनिया छोड़ दिया था।

रेनू के दिमाग में बार -बार अम्मा के अंतिम शब्द गूंज रहे थे। सत्तर साल की उमर में बाबू जी अकेले हो गए थे। जिन

बच्चों की बाबूजी छतरी हुआ करते थे। उन्हें हर मुशीबत धूप, छाँव और बारिश से बचाया था आज उनकी छतरी बनने को कोई तैयार नहीं था।

बिटिया रेनू को विदा करते समय बाबूजी की आँखें छल-छला आई थीं। जिस उमर में इंसान को सबसे अधिक परिवार की जरूरत होती है उस स्थिति में बाबूजी अकेले हो गए। अम्मा ने तो उनका साथ हमेशा के लिए छोड़ा ही था चारों बेटे और बेटी ने भी छोड़ दिया। रेनू की गाड़ी आगे बढ़ रही थीं और बाबूजी की आँखों से आँसू गिर रहे थे। फिर भी वह हाथ उठाकर कह रहे थे आजो खुश रहो। तुम चिंता मत करना। जीवन के अंतिम पड़ाव पर उन्हें बार-बार यह गीत याद आ रहा था... चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, राहीं पीछे छूटा तेरा मेला चल...।

खिलौना

अविनाश अग्निहोत्री

अपने बच्चे के जन्मदिन पर बस्ती के गरीब बच्चों में खाने के पैकेट और महंगे खिलौने बच्चों में देते रवि और उसकी बच्चे के चेहरे तो खिले थे।पर बस्ती के बच्चों में इतने कीमती खिलौनों को लेने में भी कोई खास उत्साह नही था।

रवि ने सामान देते हुए बच्चों से जब इसका कारण पूछा।तब बच्चे तो कुछ नही बोले पर वहीं खड़े एक बुजुर्ग ने गंभीर स्वर में कहा।बाबूजी ये बस्ती के गरीब मेहनती बच्चे है।

घर का चूल्हा जलाने के लिए ये खुद दिनभर अपने मां बाप के साथ तकदीर के हाथों खिलौना बन मेहनत करते है।

फिर इन कीमती खिलौनों से भला इनका क्या वास्ता।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ख़तरनाक नहीं होती सासु मां

लघुकथा
वैदेही कोठारी

सुरीली के पास बैठी दूर के रिश्ते की ननद बोली, 'तुम्हारी सास के तेजपन के चर्चे दूर-दूर तक है, थोड़ा सम्भल कर ही रहना!' सुरीली ने जब यह सुना तो सोचने लगी सास तो होती ही है थोड़ी तेज, कोई बात नहीं, मेरी माँ भी तो मुझे डांटती थी,वह सुन चुप-चाप बैठी रही। मुंह दिखाई रस्म शुरू हुई, सभी बोली बड़ी सुंदर है दुल्हन तो! कई देवरानी जेठानी मुंह देखते हुए बोली थोड़ा सावधान रहना, मन मजबूत कर लेना बड़ी ही खतरनाक है सासु मां ! वह अब डरने लगी, माँ ने कैसे घर में शादी कर दी, पता नहीं कैसे जिंदगी चलेगी? मन ही मन सोचने लगी। रात भर उसे तनाव बना रहा। पहली रात को पति से भी कैसे बोलू? पति क्या सोचेंगे?, माँ दो साल और रुक जाती तो क्या हो जाता? कम से कम मेरा मेरा पीजी तो पूरा हो जाता, और कल आखरी तारीख है, एडमिशन की! कैसे बोलूं? इसी तनाव में उसे रात भर नींद नहीं आई। सुरीली सबसे पहले उठ नहा धोकर पूजा पाठ कर चाय बनाने लगी, तभी सासु माँ बोली, अरे! सुरीली इतनी जल्दी उठ गई, थोड़ा और आराम कर लेती! नहीं माँजी, जल्दी उठ जाती हूँ मैं! सुबह के नाश्ते के बाद सुरीली दोपहर के खाने की तैयारी करने लगी, तभी सासु माँ बोली, सुरीली तैयार हो जा! क्यों माँजी? चल चलना है अभी! अभी रोटी तो बना लू!नहीं, पहले जल्दी से सूट पहन कर आ! फिर देखेंगे रोटी का काम! सुरीली तुरंत सूट पहन कर बाहर आई, सासुमाँ स्कूटर लेकर खड़ी थी, सुरीली को बैठाया और चल दी, सुरीली को कुछ समझ नहीं आ रहा था! माँ जी कहाँ ले जा रही है,? एक बड़े से होम्योपेथी कॉलेज के सामने गाड़ी रोक दी। जल्दी से अंदर प्रिंसिपल रूम में सासुमाँ बोली इसका एडमिशन कराना है, पीजी सेकेंडियर में! सुरीली सासु मां का मुंह देखते रह गई!

जमाने से आगे

लघुकथा
सुरेश सौरभ

"अरे वाह! तिमंजिला बनवा लिया भाई बढ़िया है।"

"सब सरकार की देन है।"

"समझा नहीं भाई साहब।"

"आवास का पैसा मिला है।"

"तुम्हारा तो एक मंजिला भवन बना था। फिर क्या दो मंजिला, तिमंजिला के लिए भी मिलता है, इतनी छोटी सी जगह में.."

"कभी न मिलता वो तो मेरा मकान बना था, यह पैसा तो उनके लिए है, जिनके पास बिलकुल आवास नहीं है,पर जब सब ले रहे हैं, तो मैंने भी ले लिया। हा हा..... '

"वो कैसे।"

"अपने दो भाईयों के नाम फार्म डलवाया, फिर सर्वे अधिकारी से मिल कर दूसरे का खाली प्लॉट दिखा दिया। सबको पैसा चाहिए, बीस-तीस हजार किसको कड़ुआता है। तुम भी फार्म डालो, तुम को भी मिलेगा।"

"पर जुगाड़ कैसे लगेगा?"

"तुम फार्म तो पहले ऑन लाइन कराओ भाई, फिर जुगाड़मेंट मैं तुमको बताऊँगा।"

"मैं तो सोच रहा था, मेरा एक मंजिला बना है, मुझे कभी न मिलेगा।"

"बुद्धू हो यार। जमाने के साथ चलना सीखो वर्ना बहुत पीछे चले जाओगे।"

विश्व स्वास्थ्य दिवस विशेष

मुकेश कुमार शर्मा

(लेखक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया के एक्जेक्युटिव डायरेक्टर हैं)

स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार अपनाएं- बीमारियों को दूर भगाएं

'मेरा स्वास्थ्य - मेरा अधिकार' थीम के साथ इस साल मनाया जा रहा विश्व स्वास्थ्य दिवस

राष्ट्र की उन्नति के लिए हर किसी का पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं खुशहाल होना बहुत जरूरी है, क्योंकि स्वस्थ नागरिकों से ही समृद्ध राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। यही कारण है कि स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार अपनाने के प्रति जागरूकता के लिए ही हर साल विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्थापना दिवस यानि सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इसका मूल मकसद लोगों को स्वस्थ जीवनयापन के लिए जरूरी परामर्श प्रदान करने के साथ ही बेहतर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना है। हर साल अलग-अलग थीम पर मनाये जाने वाले विश्व स्वास्थ्य दिवस की इस बार की थीम है- 'मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार'। इसके माध्यम से इस वर्ष यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि हर किसी को, हर जगह, स्वस्थ जीवन जीने का अवसर अवश्य मिले।

शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के साथ ही मानसिक रूप से भी पूर्ण स्वस्थ होना हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि सही पोषण के साथ ही ध्यान, योग और प्राणायाम को भी जीवन में जरूर शामिल किया जाए। आज शारीरिक श्रम से नाता तोड़ने का ही परिणाम है कि तरह-तरह की बीमारियाँ मानव शरीर पर कब्ज़ा जमाती जा रहीं हैं। चिकित्सकों की भी यही सलाह रहती है कि गैर संचारी रोगों से बचना है तो रोजाना कम से कम 45 मिनट तक कड़ी मेहनत व शारीरिक श्रम जरूर करें। इससे तेजी से पैर पसार रहे हृदय रोग और डायबिटीज से सुरक्षित रह सकते हैं। इसके अलावा बीड़ी-सिगरेट व अन्य तम्बाकू उत्पादों और शराब से दूरी बनाने में ही सभी की भलाई है क्योंकि कैंसर समेत कई गंभीर बीमारियां इन्हीं से पैदा होती हैं। गैर संचारी रोगों के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए ही घर के करीब में आयुष्मान भारत आरोग्य मंदिर (हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर) स्थापित किये गए हैं। इन केन्द्रों पर इन बीमारियों की स्क्रीनिंग, जांच और परामर्श के लिए कम्युनिटी हेल्थ आफिसर (सीएचओ) की तैनाती की गयी है। इसलिए जब भी कुछ असहज महसूस करें तो अप्रशिक्षित चिकित्सकों के पास जाने के बजाय बेहिचक सीएचओ की मदद लें, जो सही मायने में आपके सच्चे मददगार साबित होंगे।

अपने ही देश नहीं बल्कि विदेशों में भी आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी और बदलती जीवन शैली ने सबसे अधिक युवा पीढ़ी को प्रभावित किया है। जीवन में जल्दी से जल्दी सब कुछ हासिल कर लेने की चाह ने जहाँ युवाओं के सुकून को छीना है वहीँ उनके पास न तो सही वक्त पर खाना खाने का समय है और न ही सोने का। यही कारण है कि फ़ास्ट फ़ूड और दिखावे के लिए शराब और सिगरेट का सहारा लेने वाले युवाओं में हृदय रोग, डायबिटीज, कैंसर और हाइपरटेंशन जैसे गंभीर गैर संचारी रोग अब 30 साल की उम्र में ही शरीर पर कब्ज़ा जमाने लगे हैं।

स्वस्थ जीवन के लिए जरूरी है कि भोजन संतुलित मात्र में ही करें और उसमें फल और हरी सब्जियों को जरूर शामिल करें। शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए नियमित रूप से व्यायाम करें। इसके अलावा तनाव से दूर रहें और कभी भी कोई परेशानी महसूस हो तो परिवार वालों से जरूर साझा करें। प्रतिदिन कम से कम छह से सात घंटे की नींद लें और आराम करें। यह भी ध्यान रहे कि शारीरिक वजन बढ़ने (मोटापा) से भी कई बीमारियाँ घेर लेती हैं, इसलिए वजन नियंत्रित रखें। खानपान में इस बात का जरूर ध्यान रहे कि नमक और चीनी का कम से कम इस्तेमाल करें। इसके अलावा अधिक तैलीय खाद्य पदार्थों के सेवन से परहेज करें।

जलवायु परिवर्तन के साथ ही बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण भी सेहत के लिए कई दिक्कतें पैदा कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार हर साल विश्व में एक करोड़ से अधिक लोगों की जान पर्यावरणीय कारणों से चली जाती है जबकि यह ऐसे कारण हैं जिनसे सतर्कता बरतते हुए बचा जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव भी पारित किया है, जिसके अनुसार- स्वच्छ, स्वस्थ और शुद्ध पर्यावरण हर एक मनुष्य का सार्वभौमिक अधिकार होना चाहिए। पृथ्वी पर हमें अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ हवा, पानी और भोजन की जरूरत होती है। आंकड़े बताते हैं कि 90 प्रतिशत से अधिक लोग दूषित हवा में सांस लेते हैं। केवल वायु प्रदूषण से विश्व भर में प्रति वर्ष लाखों लोगों की मौत हो जाती है। इस सभी के प्रति भी हम सभी सचेत नहीं हुए तो आने वाला समय और कष्टकारी साबित हो सकता है।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के मौके पर आज आइये प्रण करें- 'आओ अपनाएँ स्वस्थ स्वास्थ्य व्यवहार, मेरा स्वास्थ्य-मेरा अधिकार'।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पहला सुख निरोगी काया

भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के बैनर तले प्रतिवर्ष 7 अप्रैल को एक खास थीम के साथ 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस को मनाए जाने का प्रमुख उद्देश्य स्वास्थ्य को लेकर विश्व में प्रत्येक व्यक्ति को बीमारियों के प्रति जागरूक करना, लोगों के स्वास्थ्य स्तर को सुधारना और हर व्यक्ति को इलाज की अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना ही है। पूरी दुनिया इस साल 'मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार' विषय के साथ 74वां विश्व स्वास्थ्य दिवस मना रही है। यदि पिछले कुछ वर्षों की स्वास्थ्य दिवस की थीम पर नजर डालें तो 2023 का विषय था 'सभी के लिए स्वास्थ्य', 2022 में यह दिवस 'हमारा ग्रह, हमारा स्वास्थ्य', 2021 में 'सभी के लिए एक निष्पक्ष, स्वस्थ दुनिया का निर्माण', 2020 में 'नर्सों और दाईयों का समर्थन करें' तथा 2019 में 'सार्वभौमिक स्वास्थ्य- हर कोई, हर जगह' विषय के साथ मनाया गया था।

'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाए जाने की शुरूआत डब्ल्यूएचओ द्वारा 7 अप्रैल 1950 को की गई थी और यह दिवस मनाने के लिए इसी तारीख का निर्धारण डब्ल्यूएचओ की संस्थापना वर्षगांठ को चिन्हित करने के उद्देश्य से ही किया गया था। डब्ल्यूएचओ की स्थापना के साथ ही 1948 में विश्व स्वास्थ्य दिवस की नींव भी रख दी गई थी। दरअसल उस समय लोगों की सेहत को बढ़ावा देने और उन्हें गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से दुनिया के कई देशों ने मिलकर दुनियाभर में ठोस कार्य करने की जरूरत पर बल दिया और आखिरकार विश्व स्वास्थ्य दिवस की नींव रखने के दो वर्ष बाद सन् 1950 में पहली बार 7 अप्रैल को यह दिवस मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र का अहम हिस्सा 'डब्ल्यूएचओ' दुनिया के तमाम देशों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग और मानक विकसित करने वाली संस्था है, जिसका प्रमुख कार्य विश्वभर में स्वास्थ्य समस्याओं पर नजर रखना और उन्हें सुलझाने में सहयोग करना है। इस संस्था के माध्यम से प्रयास किया जाता है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे।

हालांकि चिंता की स्थिति यह है कि पिछले कुछ दशकों में एक ओर जहां स्वास्थ्य क्षेत्र ने काफी प्रगति की है, वहीं कुछ वर्षों के भीतर एड्स, कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के प्रकोप के साथ हृदय रोग, मधुमेह, क्षय रोग, मोटापा, तनाव जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। ऐसे में स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौतियां निरन्तर बढ़ रही हैं। वैसे तो दुनिया के तमाम देश बीते कुछ दशकों से स्वास्थ्य के क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहे हैं लेकिन कोरोना काल के दौरान जब अमेरिका जैसे विकसित देश को भी बेबस अवस्था में देखा गया और वहां भी स्वास्थ्य कर्मियों के लिए जरूरी सामान की भारी कमी नजर आई, तब पूरी दुनिया को अहसास हुआ कि अभी भी जन-जन तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन स्वयं मानता है कि दुनिया की कम से कम आधी आबादी को आज भी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं। विश्वभर में अरबों लोगों को स्वास्थ्य देखभाल हासिल नहीं होती। करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिन्हें रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं तथा स्वास्थ्य देखभाल में से किसी एक को चुनने पर विवश होना पड़ता है।

भारतीय समाज में तो सदियों से धारणा रही है 'पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया' लेकिन चिंता का विषय यही है कि हमारे यहां भी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति बहुत खराब है। बहरहाल, विश्व स्वास्थ्य दिवस के माध्यम से जहां समाज को बीमारियों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाता है, वहीं इसका सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु यही होता है कि लोगों को स्वस्थ वातावरण बनाकर स्वस्थ रहना सिखाया जा सके। दरअसल विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होना ही मानव-स्वास्थ्य की परिभाषा है। यह बेहद चिंता का विषय है कि दुनिया की करीब 30 प्रतिशत आबादी के पास बुनियादी स्वास्थ्य उपचार तक पहुंच नहीं है और करीब 200 करोड़ लोग विनाशकारी अथवा खराब स्वास्थ्य देखभाल लागत का सामना कर रहे हैं, जिसमें काफी असमानताएं हैं, जो सबसे वंचित परिस्थितियों में लोगों को प्रभावित कर रही हैं। हालांकि स्वास्थ्य का अधिकार एक ऐसा मौलिक मानवाधिकार है, जिसके तहत प्रत्येक व्यक्ति को बगैर किसी वित्तीय बोझ के, जब भी जरूरत हो, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच मिलनी चाहिए।

मन का फेरः कुरीतियों पर प्रहार

समीक्षा

मनोरमा पंत

समीक्षक

अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के संपादक-लेखक सुरेश सौरभ, नवीन लघुकथा का साझा संग्रह 'मन का फेर' लेकर पाठकों के बीच उपस्थित हुए हैं, अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं कुरीतियों पर केंद्रित यह साझा लघुकथा संग्रह अपने आप में बेहद अनूठा है। जिसमें उनकी संपादन कला निखर कर आई है। बलराम अग्रवाल, योगराज प्रभाकर जैसे प्रमुख लघुकथाकारों ने एक स्वर में कहा है कि लघुकथा का मुख्य उद्देश्य समाज की विसंगतियों को सामने लाना है।' इस उदेश्य में सुरेश सौरभ का नवीनतम लघुकथा-संग्रह 'मन का फेर' खरा उतरा है। यह एक विडम्बना ही है कि विकसित देशों के समूह में शामिल होने में अग्रसर भारत का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी धर्म और परम्परा के नाम पर ढोंगी महात्माओं और कथित मौलवियों के जाल में फँसा हुआ है। अभी भी स्त्री को डायन करार कर प्रताड़ित किया जाता है, पिछड़े इलाकों में बीमार व्यक्ति को, चाहे वह दो महीने का बच्चा ही क्यों न हो, नीम हकीम के द्वारा लोहे के छल्लों से दागा जाता है। ऐसे समाज को जागरुक करने का बीड़ा उठाने में यह लघुकथा-संग्रह सक्षम है।

सुकेश सहानी, मीरा जैन, डॉ.पूरन सिंह, कल्पना भट्ट, डॉ. अंजू दुआ जैमिनी, गुलजार हुसैन, चित्तरंजन गोप 'लुकाठी', डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी, रमाकान्त चौधरी, अखिलेश कुमार 'अरूण', डॉ. राजेंद साहिल, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, रश्मि लहर, विनोद शर्मा, सहित 60 लघुकथाकारों से सुसज्जित, 144 पृष्ठीय संग्रह में, आडम्बरों को, रूढ़ियों को बेधती मार्मिक लघुकथाएँ सहज, सरल, भाषा शैली में, पाठकों को आकर्षित करने में सफल है। हाल ही में इस संग्रह का विमोचन स्वच्छकार समाज और समाज सेवियों ने किया। सौरभ जी का प्रसास है कि समाज में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक साहित्य पहुँचे। संग्रह की भूमिका प्रसिद्ध पत्रकार लेखक अजय बोकिल ने लिखी है। संग्रह की लघुकथाएँ शोधपरक एवं पठनीय हैं।

पुस्तक- मन का फेर (साझा लघुकथा संग्रह)
प्रकाशन- श्वेत वर्णा प्रकाशन नोयडा
संपादक- सुरेश सौरभ
मूल्य- 260

क्या -'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' सप्ताहान्त धमाका बन पायेगा ?

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

वीक एण्ड यानी सप्ताहान्त की परम्परा पाश्चात्य देशों से भारत आई है जहाँ सप्ताह में कार्यकारी दिनों की संख्या सोमवार से शुक्रवार तक पाँच दिन होती थी और शनिवार -रविवार सप्ताहान्त की छुट्टियां होती थीं । शनिवार की रात कामकाज आबादी पूरे सप्ताह के कामकाज़ की थकान मिटाने के लिए कुछ खुशनुमा पल परिवार के साथ बिताना चाहती है। भारत के एक लोकप्रिय कॉमेडी शो के प्रस्तुतकर्ता कपिल शर्मा जो अब तक सोनी टीवी चैनल पर -'कपिल शर्मा कॉमेडी शो ' के कारण चर्चित थे उन्होंने इन्हीं वीक एण्ड व्यूअर्स के लिये गत शनिवार से एक सौ बानवे देशों में - ' द ग्रेट इंडियन कपिल शो' का प्रसारण आरम्भ किया है ।

नेटफ्लिक्स की इस वेबसिरीज़ के बारे में कपिल कह रहे हैं कि यह शो उन्होंने पूरे परिवार कपिल शोके एक साथ बैठकर देखने के लिए बनाया है । मोबाइल पर एक सौ निन्यानवे वाले प्लान में तो कोई घरवालों के साथ बैठकर इसे देखने से रहा, ऊपर से नेटफ्लिक्स खुद कह रहा है कि तेरह साल से कम उम्र वाले लोग इसे न देखें तो फिर यह कैसे एक पारिवारिक शो है , कपिल शर्मा ही बता सकते हैं । बकौल नेटफ्लिक्स यह एक नया वीक एण्ड धमाका है । अब समय ही बतायेगा कि इस दावे में कितना दम है ?

नेटफ्लिक्स की इस नई सीरीज के पहले एपीसोड में एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रति अपना समर्थन जताने के लिए नव्या सिंह पूरा समय बस अर्चना पूरन सिंह की बाईं ओर बैठकर मुस्कुराती रहीं । स्क्रिप्ट लिखने वाले ने उनके लिए एक पँक्ति लिखना तक पसन्द नहीं किया । हमेशा की तरह शो में कपिल की पत्नी गिन्नी और उनकी भाभी हैं और माँ का आशीर्वाद तो कपिल को हर एपीसोड में लगता ही है। लेकिन, टेलीविजन से ओटीटी पर धमाकेदार इन्ट्री वाले इस शो का असल आकर्षण सुनील ग्रोवर की वापसी है। कपिल और सुनील, जो इस बार डफली बनकर आए हैं, के बीच ऑस्ट्रेलिया ट्रिप की यादें ताजा हुईं। सुनील ने अपने झगड़े के दूसरे सीजन की डिमाण्ड के बारे में भी बताया लेकिन उसके बाद जो कुछ इस पात्र और रणबीर के बीच इस शो में हुआ, उसकी स्क्रिप्टिंग बेहद कमजोक करं है और बकौल एक समीक्षक इससे बढ़िया स्क्रिप्ट तो इन दिनों गाँवों की मॉडर्न नौटंकियों की होने लगी है। पटकथा ऐसे किसी भी शो का प्राण तत्व माना जाता है अतः इसमें कोताही नहीं होनी चाहिए मगर इस बात को कोई माने तब ना ?

द ग्रेट इंडियन कपिल शो का पहला एपीसोड ही सुपरस्टार रणबीर कपूर, अनुभवी अभिनेत्री नीतू कपूर और उनकी बेटी रिद्धिमा कपूर जैसे मेहमानों के साथ शुरू होने के बाद भी स्थायी प्रभाव छोड़ने में विफल रहा। गुदगुदाने वाले हास्य को भूल जाइए, अभी तक तो इस शो के एपीसोड्स दर्शकों के चेहरे पर मुस्कुराहट तक नहीं ला पा रहे हैं ।

कपिल शर्मा अपने वही पुराने चुटकुले जारी रखते हैं - सामान्य 'पति-पत्नी' हास्य, सितारों से 'मध्यम वर्ग' के सवाल पूछना, कीकू शारदा के चरित्र को शर्मसार करना और अर्चना पूरन सिंह को ट्रोल करना। सुनील ग्रोवर एक बार फिर क्रॉस-ड्रेस करते हैं, जिससे दर्शकों को उनके प्रतिष्ठित चरित्र 'गुत्थी' (इस बार वो में उनका नाम डफली है) की याद आती है, और शो में उनके पिछले कृत्यों के साथ समानता के बावजूद, वह, और केवल ' वह' , बनाने में कामयाब होते हैं। यही ' वह ' जब अपनी शर्मीली हरकतों में शामिल होता है तो आप हंसते हैं।ऐसा लगता है कि कपिल और रचनात्मक टीम ने नए हवाई अड्डे के सेट-अप - 'कप्स कैफे' - के लिए वास्तव में कड़ी मेहनत की है, लेकिन मेरी इच्छा है कि उन्होंने हास्य का पुनर्मूल्यांकन करने और कुछ नया लाने के लिए हर दिन कुछ घण्टे निकालने चाहिये ।

यह लगभग छः साल पहले का प्रसंग है ऑस्ट्रेलिया से लौटते वक्त कपिल शर्मा और सुनील ग्रोवर के बीच झगड़ा हो गया था, जिसके बाद दोनों ने कई बार एक-दूसरे पर आरोप लगाए, कपिल ने अपनी करतूत के लिए माफी भी मांगी, लेकिन सुनील ने उन्हें माफी देने में छः साल लगा दिए। 'गुत्थी' और 'डॉक्टर मशहूर गुलाटी' जैसे कॉमिक चरित्र निभाने के बाद अब सुनील का नया अवतार देखने को मिल रहा है। वो डफली बनकर दर्शकों को एंटरटेन कर रहे हैं। इनके अलावा शो में कृष्णा अभिषेक, कीकू शारदा, राजीव ठाकुर भी हैं। जज की कुर्सी पर अर्चना पूरन सिंह ही हैं।एक विश्लेषण के अनुसार कपिल शर्मा शो के बारे में वो पाँच बातें उसे उम्मीदों के सातवें आसमान से जमीन पर ले आती हैं , उनमें पहली बात तो यह है कि इसके जोक्स पुराने ही है जो कपिल के पुराने टीवी शो की याद दिलाते हैं और लगता है हम अभी भी टीवी शो देख रहें हैं ? दूसरी बात, कपिल और उनकी टीम पुराने घिसे-पिटे चुटकले ही आजमा रही है जो हँसाते कम और चिढ़ाते ज्यादा। हैं । तीसरी बार ओटीटी पर आने से कपिल को दोहरे अर्थ वाले संवाद की मानों छूट मिल गई है । इसकी झलक पहले एपिसोड में ही मिल गई ।

चौथी बात सुनील ग्रोवर से बहुत उम्मीदें थी मगर वो डफली बनकर, भी गुत्थी को ही रिपीट करते नजर आये ,और पाँचवी और अन्तिम बात पहले टीवी पर कपिल के जोक्स मुफ्त में मौजूद थे, अब ओटीटी पर शुल्क चुकाना होता है । कुल मिलाकर यह वेबसिरीज़ ऊँची दुकान,फीके पकवान हैं ।

बैतूल बाजार नगर पालिका के दो बार अध्यक्ष रहे पं. नरेन्द्र शुक्ला भाजपा में शामिल

बैतूल। जिस बैतूलबाजार को पंडित नरेन्द्र शुक्ला की वजह से कांग्रेस का गढ़ कहा जाता था, आज वही नरेन्द्र शुक्ला अपने हजारो समर्थको के साथ भाजपा में शामिल हो गए। बैतूल जिले का सबसे प्राचिन गांव एवं नगरीय क्षेत्र बैतूलबाजार में अभी तक नरेन्द्र शुक्ला एवं उनकी जीवन संगनी ही सबसे अधिक समय तक बैतूलबाजार नगर परिषद के अध्यक्ष चुने गए। शुक्ला परिवार की श्रीमती सरोजनी शिवकुमार शुक्ला बैतूल कृषि उपज मंडी की अध्यक्ष रह चुकी है। शुक्ला परिवार के एक अन्य सदस्य राजेश शुक्ला (पप्पु भैया) बैतूल जनपद के सदस्य चुने गए थे। बैतूल विधानसभा क्षेत्र में शुक्ला परिवार का काफी प्रभाव रहा है। बैतूल बाजार में शुक्ला चौक

निवासी पं. नरेन्द्र शुक्ला का भाजपा में प्रवेश को एक क्रांतिकारी कदम बताते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने उनके चरण स्पर्श कर उनका आर्शिवाद लिया। श्री शुक्ला के प्रवेश की भाजपा विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि भाजपा में ऐसे वरिष्ठ समाजसेवियो का स्वागत एवं अभिनंदन है। श्री खण्डेलवाल ने श्री शुक्ला के भाजपा में प्रवेश से बैतूलबाजार नगरीय क्षेत्र में भाजपा के प्रभाव एंव संगठन के विस्तार होने की बात कहीं। भाजपा जिला महामंत्री सुधाकर पंवार ने भी श्री शुक्ला का भाजपा में प्रवेश पर हार्दिक स्वागत किया। सर्व बह्ममण समाज बैतूल के अध्यक्ष नरेन्द्र शुक्ला कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओ में गिने जाते थे।

प्रशिक्षण कक्ष में तन के साथ जरूरी है कि आप मन से भी उपस्थित रहे- कलेक्टर

बैतूल। निष्पक्ष, शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी निर्वाचन प्रक्रिया के दृष्टिगत जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने कहा कि प्रशिक्षण मात्र औपचारिकता नहीं है। निर्वाचन के लिए आपको सौंपा गया दायित्व जितना महत्वपूर्ण है उतना ही संवेदनशील भी है। प्रशिक्षण केंद्र में तन के साथ मन की उपस्थिति भी जरूरी है। श्री सूर्यवंशी गंज क्षेत्र में शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में चल रहे निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को मोटिवेशनली संबोधित कर रहे थे।

द्वितीय चरण में 26 अप्रैल को बैतूल संसदीय क्षेत्र में मतदान होना है। मतदान के पूर्व की तैयारियों को बारीकी से देखने और समझने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी स्वयं हर स्तर पर चल रहे प्रशिक्षण एवं कार्यक्रमों पर भी सतत नजर बनाए हुए हैं। इसी अनुक्रम में वह गंज क्षेत्र में चल रहे प्रशिक्षण को देखने के लिए प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचे। उन्होंने प्रशिक्षण को देखा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मुख्य प्रशिक्षक श्री ठाकुर और उनकी टीम के सभी सदस्य निर्वाचन संबंधी नियमों और कार्य प्रणाली में पूरी तरह दक्ष हैं। आपको उनकी योग्यता का लाभ लेना चाहिए। आज के प्रशिक्षण में जहां सात पुरुष प्रशिक्षक उपस्थित है, वहीं सात महिला प्रशिक्षकों ने भी प्रशिक्षण में अपना योगदान दिया है। श्री सूर्यवंशी ने प्रशिक्षण के प्रति संतोष प्रकट किया। उल्लेखनीय है कि मतदान के पूर्व दिवसों श्व2 और श्व3 के दिन निर्वाचन संबंधी कार्य पद्धति के इस प्रशिक्षण सत्र में 251 में से 244 प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे। 7 कमरों में चल रहे इस प्रशिक्षण के प्रत्येक कक्ष में श्री सूर्यवंशी ने प्रशिक्षण को देखा और मतदान कार्य में लगे कर्मियों को प्रोत्साहित किया।

अंतर्राज्यीय चेक पोस्ट कुकरू बैरियर पर एसएसटी टीम व पुलिस की संयुक्त टीम ने 10 लाख किए जप्त

एसएसटी टीम एवं पुलिस की संयुक्त कार्यवाही

बैतूल। पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया एवं अति. पुलिस अधीक्षक कमला जोशी तथा एसडीओपी भैसदेही भूपेन्द्र सिह मौर्य, एसडीएम भैसदेही अनीता पटेल, तहसीलदार के निर्देशन एवं थाना प्रभारी भैसदेही अंजना धुर्वे के नेतृत्व मे थाना भैंसदेही क्षेत्रान्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्राजीय चेकिंग पाइंट कुकरू बैरियर पर शनिवार को एसएसटी टीम एवं अन्तर्राज्यीय चेकिंग नाको पर लगे पुलिस बल द्वारा महाराष्ट्र की ओर से आ रही एक मोटरसाइकिल को रोक कर चेकिंग की। चैकिंग के दौरान अमर पिता शंकर गाठे उम्र 38 साल निवासी ग्राम काठकुंभ महाराष्ट्र के पास से नगदी कुल 10 लाख रूपए मिले, जिसके संबंध मे कोई वैध दस्तावेज नहीं पाये जाने से विधिवत जप्त किया गया। जो अग्रिम कार्यवाही आयकर विभाग द्वारा की जावेगी। प्रकरण की उक्त कार्यवाही मे थाना प्रभारी भैंसदेही अंजना धुर्वे, एसएसटी प्रभारी शिवपाल परते कार्यपालिक मजिस्ट्रेट, आकाश, रमेश, जिया किरार, अंकिता शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दो शव मिलने से फैली सनसनी, थाने में दर्ज की थी गुमशुदगी

बैतूल। बैतूलबाजार थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सेहरा में एक वृद्ध का शव कुएं में पड़ा मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटना स्थल का जायजा लिया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक सेहरा निवासी हिवराज लिल्होरे (55) का शुक्रवार की सुबह गांव के ही पास एक कुएं में पड़ा मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से वृद्ध के शव को कुएं के बाहर निकाला। शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस के मुताबिक मृतक दो दिन पूर्व से ही घर से लापता था। परिजनों ने वृद्ध की गुमशुदगी की शिकायत बैतूल थाने में दर्ज कराई थी। वृद्ध का शव शुक्रवार सुबह कुएं में पड़ा मिला है। बताया जा रहा है कि वृद्ध की मानसिक हालत ठीक नहीं थी। वृद्ध कहीं भी घूमने के लिए निकल जाता था। हालांकि वह घर से बाहर जाने के बाद समय पर घर वापस भी आ जाता था, लेकिन दो दिन पूर्व वृद्ध घर से निकला और वापस नहीं आया। परिजनों ने तलाश शुरू की। वृद्ध के नहीं मिलने पर परिजनों ने इसकी गुमशुदगी की शिकायत थाने में दर्ज कराई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मनाई मां कर्मा जयंती, शहर में निकली वाहन रैली

सामाजिक कार्यक्रम में 75 वर्ष पूर्ण किए बुजुर्गों, प्रतिभावान छात्रों का किया सम्मान

बैतूल। मां कर्मा साहू समाज नगर समिति द्वारा मां कर्मा जयंती का भव्य आयोजन बैतूल नगर में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत कलश यात्रा से हुई, जिसके बाद विभिन्न मार्गों से निकली वाहन रैली में सैकड़ों सामाजिक जनों ने भाग लिया। इसके बाद नागदेव मंदिर सदर में समिति द्वारा वाहन रैली के जलपान की व्यवस्था की गई। उसके बाद, कर्मा मंगल भवन में 75 वर्ष पूर्ण किए बुजुर्गों का सम्मान, प्रतिभावान छात्रों का सम्मान, सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए। सभी उपस्थित सामाजिक जनों ने फाग उत्सव मना कर हर्षोल्लास से फूलों की होली खेली। भोजन प्रसाद के बाद कार्यक्रम का समापन किया गया।

मां कर्मा जयंती के अवसर पर काली चट्टान स्थित कर्मा भवन में आयोजित कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने उत्साह और उत्सव भावना के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में समाज के नेतृत्व व्यक्तियों ने समाज की उन्नति और सामूहिक विकास की बात की। यहां तक कि युवा एवं बच्चों को भी समाज के मूल्यों और संस्कृति के प्रति समर्पित करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर समाज के सदस्यों ने एक-दूसरे के साथ सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से जुड़ने का बड़ा संदेश भी दिया। इस विशेष आयोजन में समाज की संस्कृति के महत्व को बढ़ावा दिया गया, जहां समाज के लोगों ने भगवान की पूजा और आदर्शों के प्रति अपना समर्पण प्रकट किया। साथ ही, छोटे बच्चों को भी अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता और समाज का महत्व बताया गया। इसके साथ ही, वृद्धों का सम्मान और समाज में उनकी अहम भूमिका को विशेष रूप से माना गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि इस कार्यक्रम ने समाज में एकता, सामूहिकता, और परंपरागत मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आयोजन के माध्यम से समाज ने एकता का संदेश दिया। यह आयोजन समाज में सामूहिक भावना और सहयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ, अगली पीढ़ी को अपनी संस्कृति और विरासत के प्रति उत्साहित करता है। इसे एक सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सव के रूप में देखा जा सकता है, जो समाज के विकास और एकता को प्रोत्साहित करता है। इस आयोजन ने समाज में एक महत्वपूर्ण संदेश भी दिया कि समाज की सबसे मौलिक शक्ति उसके सदस्यों में एकता और सामूहिक भावना में होती है। इसके माध्यम से, सामाजिक जनों को यह भी याद दिलाया गया कि हमें अपनी संस्कृति, धरोहर और उत्सवों को समृद्ध और सुरक्षित रखने का जिम्मेदारी स्वीकार करना चाहिए। यह आयोजन भविष्य के आयोजनों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत भी बना।

अप्रैल में टिटहरी ने दिए 4 अंडे, होगी अच्छी बारिश

प्रोफेसर डॉ. सुखदेव डोंगरे ने जारी किया शोधपत्र

बैतूल। टिटहरी के 04 अंडे जयवंती हक्सर शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय बैतूल के वाणिज्य संकाय के भवन की छत पर विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश शेषकर, प्रयोगशाला परिचारक अनिल आठोले, तकनीशियन सुदर्शन महाते ने 4 अप्रैल 2024 गुरुवार को प्रात: 11 बजे देखे और डॉ. राजेश शेषकर ने महाविद्यालय के ही जूलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुखदेव डोंगरे को उसी दिन दोपहर 3.30 बजे जानकारी दी। इसके बाद डॉ. सुखदेव डोंगरे द्वारा स्वयं ने टिटहरी के 4 अण्डों का अवलोकन परीक्षण किया। टिटहरी अंडों के पास दिखी, लेकिन हमारी हलचल से अण्डों से दूर हो गई, टिटहरी ने 4 अंडे भूरे रंग के काले धब्बे वाले दिए हैं। नर-मादा पक्षी लगातार अंडों को सेने का कार्य कर रहे हैं। पक्षी मानव हलचल होने पर दूर हो जाते हैं। इसका जूलॉजिकल नाम स्कोलोपेकस डे है।

डॉ. सुखदेव डोंगरे का शोध अध्ययन बताता है कि इस वर्ष 2024 में टिटहरी (सेंड पाइपर) ने 04 अंडे वाणिज्य भवन की छत पर दिए हैं एवं आर.एम. नाईक, पी.वी. जार्ज, बी धुर्वे (1961) मुंबई, मुनकर तेज (1985) पूना, एस श्रीधर करबंकी (1991) केसी टसंग व वांग लुअन केंग (2007) के अनुसार जिस वर्ष टिटहरी चार अंडे देती है उस वर्ष बारिश अच्छी होती है। टिटहरी पक्षी अक्सर जोड़े में मानसून के पहले दिखाई देते हैं। इनका प्रजनन का समय मार्च से अगस्त तक होता है। ये पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान, प्रदेश तथा दूसरे देशों में माइग्रेशन एवं प्रजनन करते हैं। कई देशों में लोग इनके अण्डों का उपयोग अस्थमा एवं टाइफाइड के लिए करते हैं। इन पक्षियों को लोग त्वचा एवं वात की बीमारी दूर करने के लिए भी करते हैं।

कांग्रेस विधि एवं मानवाधिकार के प्रदेश महासचिव एवं उपाध्यक्ष भाजपा में शामिल

देवास। कांग्रेस विधि एवं मानवाधिकार विभाग के प्रदेश महासचिव एडवोकेट सुरेश चौधरी गुर्जर एवं उपाध्यक्ष एडवोकेट देव कनासिया ने भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव खंडेलवाल के नेतृत्व में भाजपा कार्यालय पर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। चौधरी एवं कनासिया के भाजपा में शामिल होने पर भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पमाला से उनका स्वागत किया गया।

देवास के मानस चौहान ने बड़े पर्दे पर दिखाया जलवा

बॉलीवुड फिल्म गुडलक में निभाई डॉक्टर की भूमिका एवं किया डांस

देवास। देवास शहर के कलाकार भी फिल्म जगत में अपना नाम कमा रहे हैं। हाल ही में रिलीज हुई एक बॉलीवुड फिल्म जिसका नाम गुडलक है जो सिनेमाघरों में 5 अप्रेल से दिखाई जा रही है। इस फिल्म में देवास के आर.एस.डी.ए. डांस क्लास के कोरियोग्राफर मानस चौहान ने डॉक्टर की भूमिका निभाते हुए सॉग पप्पी चौकन्ना में शानदार डांस भी किया है। इस फिल्म की शूटिंग उज्जैन, इंदौर, मुम्बई एवं आसपास की जगहों पर की गई है।

देवास रोलबॉल टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए रवाना

देवास। जिला रोल बॉल एसोसिएशन के सचिव संदीप जाधव ने बताया कि रोलबॉल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 06 से 07 अप्रैल 2024 मेडिकैप्स इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर में आयोजित होगी। जिसमें भाग लेने के लिए देवास जिले की टीम में जतिन लॉट, सक्षम सिकरवार, हिमांशु शर्मा, वरुण कुशवाह, ध्रुव चौहान, अक्षत राठौर, हर्षित शेन , हरिप्रिया यादव, शीतल चौधरी, एकता सोलंकी है रेफरी राजवीर ठाकुर, देवराज सांगते, कोच पवन यादव, मेनेजर शैलेंद्र चंद्रवंशी के साथ रवाना हुए। इस अवसर पर प्रेस क्लब सचिव चेतन राठौड़, उपाध्यक्ष पावन पाटिल, अश्विनी जाधव, अर्पणा यादव सह सचिव पावन पाटिल, किरण राव, खुशबू पाटिल, तन्मय मेहता, सूरज वामनिया, रश्मि ठाकुर, हर्षिता कौशल, विशाल

सिंह, रैना कौशल, प्रियांशी कदम, उर्वशी मंडलोई, युवराज सिंह, धर्मेंद्र सिंह, रितिक मुकाती, ऋतुराज सिंह, सुमित शर्मा, उदय भावसार, निखिल सिंह, साक्षी चौहान, प्रियंका ठाकुर, कुमकुम सोलंकी, भावना गुर्जर, गोरेश्वरी राठौर, तनिषा पांचाल सुनील मालवी, लखन योगी, आकाश चौहान, रोहित मालवी, गौरव मालवी, आदि ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रीय स्तर पिट्ठू (सितोलिया) वर्कशॉप का समापन

देवास। पिट्ठू फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वाधान में पिट्ठू एसोसिएशन ऑफ मध्य प्रदेश द्वारा नेशनल रेफरी एवं प्रशिक्षक वर्कशॉप, माहेश्वरी भवन इंदौर में दो दिवसीय वर्कशॉप आयोजित की गई ,जिसमें 12 राज्यों के रेफरी एवं प्रशिक्षको ने हिस्सा लिया। सेमिनार को पिट्ठू फेडरेशन ऑफ इंडिया के टेक्निकल डायरेक्टर कृष्णा गोपाल मिश्रा द्वारा कंडक्ट किया गया। सेमिनार में सभी को पिट्ठू खेल में जो नियम है उनसे सभी को अवगत कराया, देवास जिला पिट्ठू संघ से सचिव विवेक बंजारे, कोषाध्यक्ष शिव प्रजापत, सदस्य राहुल भिलाला ने

वर्कशॉप में हिस्सा लिया साथ ही नेशनल रेफरी सेमिनार क्वालीफाई किया। वर्कशॉप के समापन अवसर पर समाजसेवी ईश्वर बाहेती, पिट्ठू फेडरेशन ऑफ इंडिया महासचिव नवीन गौड़ ,कोषाध्यक्ष हरीश चौबे , पिट्ठू फेडरेशन ऑफ मध्य प्रदेश सचिव गुलाब सिंह चौहान ,ईश्वर सिंह चौहान ने प्रमाण पत्र वितरित किए।सेमिनार में क्वालीफाई होने पर देवास जिला पिट्ठू संघ के संरक्षक सुदेश सांगते , अध्यक्ष कपिल व्यास, उपाध्यक्ष अभिषेक गोस्वामी, रितु व्यास ने बधाई दी। उक्त जानकारी देवास कोच शिव प्रजापत ने दी ।

राधा कृष्ण के चलित उत्कृष्ट नृत्य ने नगरवासियों का मनमोहा

मां कर्मा जयंती पर सभी को बांधी पगड़ी

सुबह सवेरे, सोहागपुर।

साहू समाज की आराध्य देवी भक्त शिरोमणि मां कर्मा जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। समीपवर्ती ग्राम सेमरीहरचंद से मां कर्मा जयंती मनाने जाने के समाचार हैं।इस अवसर पर महारानी लक्ष्मीबाई मंच परिसर से मां कर्मा की शोभायात्रा निकाली गई। इसके पूर्व साहू समाज के महिलाओं ,पुरुषों एवं बच्चों को केसरिया पगड़ी के अलावा पट्टिका गले में पहनाई गई। शोभायात्रा में मां कर्मा की प्रतिमा,के अलावा घोड़े पर सवार मातृशक्ति चल रही थी। बैंड बाजों की धुन पर युवक नृत्य करते चल रहे थे। वहीं गाडरवारा की नृत्य राधा कृष्ण को जोड़ी ने पूरे रास्ते हमेशा की तरह जगह-जगह तालियां बटोरीं।शोभायात्रा अस्पताल रोड, कन्या शाला, बिहारी चौक, कमानिया गेट, मुख्य बाजार, पलकमती नदी से होकर एक निजी स्कूल में विर्सजित हुई। इसके पूर्व समाज के प्रतिभावान की विभूतियों को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि साहू समाज ने अपने प्रतिष्ठान मां कर्मा जयंती पर बंद रखे थे। उक्त आश्य की जानकारी संदीप साहू ने सुबह सवेरे संवाददाता को दी।

मित्र फ्रेंड्स कन्या शाला में 'डोनेट 999 कैंपेन' का शुभारंभ

सुबह सवेरे सोहागपुर

ईसाई मिशनरी के तत्वावधान में सन् 1875 से बालिका शिक्षा को समाज सेवा के एकमेव उद्देश्य के स्थापित मित्र (फ्रेंड्स) कन्या शाला में प्रवेशोत्सव एवं 'डोनेट 999 कैंपेन' का शुभारंभ पूर्व छात्र-पालक प्रतिनिधि अधिवक्ता जय प्रकाश माहेश्वरी, पूर्व अधिवक्ता संघ अध्यक्ष बी. के .शर्मा , सरस्वती शिशु मंदिर के उपाध्यक्ष अभिषेक जैन, पूर्व व्यापारी संघ अध्यक्ष मुकेश मालवीय, जी आर मंडलोई एवं पालकों की गरिमामय उपस्थिति में संम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मित कन्या शाला प्राचार्य डॉ. संजीव शुक्ला ने कैंपेन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मित्र कन्या शाला सोहागपुर में लगभग 150 वर्षों से गरीब, दलित एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को 'गरीब की बेटी - ज्ञान की ज्योति ' योजना के माध्यम से निशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है । वहीं समाज सेवा के इस पावन अभियान में समाज की सहभागिता बढ़ाने की आशा के साथ संस्था ने इस वर्ष ' डोनेट 999 कैंपेन' प्रारंभ की है । इस कैंपेन के अंतर्गत शाला परिवार पूर्व छात्र एवं छात्राओं, पालकों, शुभचिंतकों एवं समाज के सम्पन्न

वर्ग से संपर्क कर अपील की जाएगी ।कि वंचित , दलित वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु कम से कम ?999 की दान राशि प्रदान करें ।जिसका उपयोग विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री, गणवेश प्रदान करने के साथ उनके सुरक्षित परिवहन में किया जाएगा। इसके पूर्व आमन्त्रित अतिथियों एवं नवीन प्रवेशित विद्यार्थियों के स्वागत किया गया।कार्यक्रम समापन के पूर्व समस्त अतिथियों ने शुभकामनाओं के साथ दान स्वरूप सहयोग राशि प्रदान करके कैंपेन का शुभारंभ किया ।

उल्लेखनीय है कि उक्त फ्रेंड्स चर्च कन्या शाला की स्थापना 1875 में फ्रेंड्स सर्विस काउंसिलिंग लंदन के द्वारा सोहागपुर में स्थापना की गई थी। इस अवसर पर शिक्षिका सुनिला मसीह, गुड़िया रघुवंशी, रूपारानी ठाकुर, सोनाली यादव, तनु आरसे , शहनाज खान , कृतिका यादव , अफसाना शाह के साथ नव प्रवेशी विद्यार्थियों के पालक नसीर खान , काशीराम अहिरवार , उमेश आरसे , सलमान खान आदि उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन संजीव शुक्ला ने किया। आभार शिक्षिका सुनिला मसीह ने व्यक्त किया।

'दुकान' जो खुलने से पहले बंद हो गई

संजय लीला भंसाली के निर्देशन में सिद्धार्थ-गरिमा की लम्बे अरसे से बन रही फिल्म 'दुकान' आखिरकार सिनेमाघरों में पहुंच गई। बीते एक दशक से इस कहानी पर सिद्धार्थ-गरिमा दोनों काम करते रहे। इस दौरान किराए की कोख को लेकर न सिर्फ देश में नए कानून बने। बल्कि, इस कानून के चलते महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ ठिकानों पर चलने वाली किराए की कोख की 'दुकानों' को भी अपना शटर गिराना पड़ा।

फिल्म 'दुकान' की कहानी इस कानून से बनने के पहले की है। परदे पर कहानी की शुरुआत और इसके उपसंहार के सालों का जिक्र भी आता रहता है। किंतु दिन, महीने, साल गुजरते जाते हैं, इसके मुख्य किरदारों पर इसका कोई फर्क पड़ता नहीं दिखता। फिल्म 'दुकान' इन सबके चलते अपनी प्रासंगिकता आज के समय में खो देती है। कृति सेनन को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाने वाली फिल्म 'मिमी' का विषय भी कुछ कुछ ऐसा ही था। लेकिन, वह ओटीटी पर आई और खूब देखी भी गई। 'दुकान' सिनेमाघरों में सजी है, पर चली नहीं! एकता कपूर, करण जौहर, तुषार कपूर और यहां तक कि शाहरुख खान जैसे सितारों ने सरोगेसी (किराए की कोख) के जरिये बच्चे जन्मे हैं। फिल्म 'दुकान' के क्लाइमेक्स में खान और कपूर सितारों का जिक्र भी आता है। लेकिन, अगर 2021 में बना कानून दशक भर पहले अमल में आ गया होता, तो इन सितारों में से कोई भी सरोगेसी से बच्चे नहीं पा सकता था। सरोगेसी कानून साफ कहता है कि अगर किसी दंपत्ति के पहले से जीवित बच्चे हैं, तो वह किराए की कोख नहीं अपना सकता। या फिर कि कोई एकल व्यक्ति सरोगेसी के जरिये माँ या बाप नहीं बन सकता।

फिल्म 'दुकान' दो साल से बनकर तैयार फिल्म है। सरोगेसी कानूनों में इन दो साल में भी कई बदलाव हुए। ये फिल्म उतनी कानूनी पचड़े वाली है भी नहीं, जितनी कि इसे बनाने की कोशिश की गई। फिल्म की एक लाइन की कहानी बहुत मार्मिक है और वह ये कि अगर किसी दंपत्ति का परिवार बढ़ाने के लिए अपनी कोख किराए पर देने वाली मां को अपने गर्भ से जन्मने वाले बच्चे से प्यार हो जाए तो क्या होगा? कहानी के इस सबसे खास बिंदु को भी इसके लेखकों ने बहुत ही सामान्य बना दिया। उसे बच्चे से प्यार है या नहीं, ये स्थापित करने से पहले ही सिर्फ बच्चे को अपना दूध न पिला पाने की बात सुनकर सरोगेट मां भाग जाती है और कहीं दूर जाकर इस बच्चे को जन्म देती है।

इसके बाद इस बच्चे के इसके कानूनी मां-बाप तक पहुंचने और इस दंपत्ति के सरोगेट मां को अपने परिवार का हिस्सा मानने की जंग दिखाती है। लेकिन, इस मूल कहानी तक आने से पहले फिल्म सरोगेट मां का बचपन, किशोरावस्था और जवानी में ही अपने से तीन साल छोटी किशोरी की सौतेली मां बन जाने में इतनी खोई रहती है। दर्शक फिल्म के मूल मुद्दे तक आने से पहले ही उकताने लगते हैं। निर्देशक

संजय लीला भंसाली की फिल्मों में दिखने वाली भव्य लोक परंपरा में उन्होंने इस फिल्म में भी दिखाई दी। हवा में उड़ती चुनरिया, जमीन पर बनी रंगोली, टॉप एंगल कैमरे से फिल्माए गए नृत्य दृश्य, गानों में सहायक कलाकारों के वस्त्रों की रंगीनियां और पार्श्वसंगीत के लिए कोरस और ढोल ताशों का इस्तेमाल दोनों को भंसाली का 'कॉपी कैट' बनाता चलता है।

फिल्म 'दुकान' का नाम तो महिला विरोधी ही है। किसी के बच्चे की मां बनने को तैयार होने के लिए बहुत संभव है कि उस महिला के सामने कोई न कोई मजबूरी रहती ही होगी। लेकिन, यहां इसे भोग-विलास के साधन जुटाने के लिए ज्यादा जरूरी दिखाया गया। कुछ गरीब महिलाएं भी लेकिन उनका संदर्भ बहुत ही चलताऊ तरीके से तब आता है जब कहानी की नायिका माथे पर बदनामी लेकर जेल पहुंच जाती है। ये नायिका है 'जामताड़ा' वाली मोनिका पंवार। केतकी दवे सरीखा आ रा रा रा कहने की कोशिश करने वाली मोनिका काबिल अभिनेत्री हैं, इसमें शक नहीं लेकिन ये किरदार उनकी अभिनय क्षमता से कहीं ज्यादा विस्तार वाला है।

अपने से दूनी उम्र के व्यक्ति से शादी करने वाली चमेली उर्फ जैस्मीन ऐसा क्यों करती है, इसे ढंग से स्थापित करने में भी फिल्म चूक जाती है। बच्चों से प्यार करने वाली जैस्मीन कैसे बच्चों से घृणा करने लगती है और क्यों आखिर एक दिन फिर उसका बच्चों के प्रति प्यार फिर से जाग उठता है, ये ग्राफ किसी भी अभिनेत्री के लिए अपना दम खम साबित करने के लिए बहुत बड़ा मौका है। लेकिन, मोनिका भी फिल्म के लेखकों-निर्देशकों की तरह एक ही सुर में पूरा किरदार निभा देती हैं और एक वक्त के बाद ओवर एक्टिंग भी करते नजर आने लगती हैं।

क्या सुनील शेट्टी नाना बनने वाले है?

सुनील शेट्टी की बेटी और एक्ट्रेस अथिया शेट्टी ने 2023 में क्रिकेटर केएल राहुल संग शादी की। इसके बाद से एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर काफी चर्चा में है। अथिया शेट्टी की प्रेग्नेंसी को लेकर खबरें सामने आने लगी। पहले अथिया ने शेट्टी ने अपने बचपन की एक तस्वीर शेयर की, जिस पर लोगों ने कमेंट कर एक्ट्रेस से प्रेग्नेंसी को लेकर सवाल किया। इसके बाद अथिया शेट्टी के पिता सुनील शेट्टी ने डांस रियलिटी शो 'डांस दीवाने' में 'नाना' बनने के सवाल पर ऐसा जवाब दिया कि एक्ट्रेस की प्रेग्नेंसी की खबर को और हवा मिल गई।

अथिया शेट्टी और केएल राहुल की शादी को एक साल से ज्यादा का समय हो चुका है। शादी के बाद अब कपल के पेरेंट्स को लेकर भी एक के बाद एक खबर सामने आ रही हैं। इसको लेकर अभी हाल में सुनील शेट्टी ने भी रिएक्शन दिया है। सुनील शेट्टी से रियलिटी शो 'डांस

दीवाने' से नाना बनने के बारे में सवाल किया गया। जिसका जवाब देते हुए सुनील शेट्टी ने कहा कि 'अगले सीजन में शो में जब आऊंगा तो मैं नाना की तरह स्टेज पर चलूंगा'। सुनील शेट्टी के इस बयान के बाद अथिया शेट्टी की प्रेग्नेंसी की खबर हवा मिलनी शुरू हो गई। सुनील शेट्टी के बयान को लेकर भी सच्चाई सामने आ गई है। रिपोर्ट के मुताबिक बॉलीवुड एक्टर सुनील शेट्टी ने 'नाना' बनने वाली बात मजाक में कही थी। जिसका गलत मतलब निकाला गया।

रियल बॉक्स

मनोरंजन की दुनिया में अपराध बिकाऊ मसाला!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

जिस तरह दूसरे बाजार हैं, उसी तरह मनोरंजन का भी एक बड़ा बाजार है। जब से छोटे परदे की अहमियत बढ़ी है, ये बाजार और ज्यादा फल-फूल गया। इसी बाजार का एक प्रमुख आइटम है 'अपराध।' समाज में घटने वाली सामान्य आपराधिक घटनाओं को सनसनी बनाकर पेश करने में छोटे परदे को महारत हासिल कर ली है! जब टीवी पर ख़बरों की दुनिया का विस्तार हुआ, तब अपराध से जुड़ी ख़बरों को इतनी ज्यादा अहमियत नहीं थी! लेकिन, धीरे-धीरे जब अपराध की ख़बरें बिकाऊ माल लगने लगी, तो इन पर कार्यक्रम बनने लगे! ख़बरों में भी हिंसा वाली घटनाओं का हिस्सा अलग दिखाया जाने लगा! जब चैनल वालों का इस पर भी मन नहीं भरा तो अपराधिक ख़बरों को नए कलेवर में स्टोरी बनाकर पेश किया जाने लगा! जुर्म, सनसनी, डायल 100, क्राइम रिपोर्टर, क्रिमिनल, दास्ताने-जुर्म और एसीपी अर्जुन जैसे कई कार्यक्रम न्यूज़ चैनलों पर आने लगे।

ऐसा भी समय आया भी था, जब रिमोट पर किसी भी खबरिया चैनल का बटन दबाओ देखने को 'क्राइम न्यूज़' ही मिलती थी! जब इसी छोटे परदे और मोबाइल स्क्रीन पर 'ओटीटी' आया तो इस पर अपराध ही सबसे ज्यादा दिखाया जाने लगा और उसके दर्शक बढे। आज ओटीटी पर सबसे ज्यादा लोकप्रिय सीरीजों में अपराध से जुड़ी कथाएं ही हैं। वास्तव में तो जब से ओटीटी आया, तब से अपराध आधारित वेब सीरीज की बाढ़ सी आ गई। बड़े परदे के बड़े फ़िल्मकार भी कोई न कोई अपराध कथा लेकर ओटीटी पर हाजिर दिखाई देते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अच्छी अपराध कथाएं अपनी स्टोरी लाइन की वजह से देखने वाले को हिलने नहीं देती। एक एपिसोड देखने का टाइम निकालने वाले दर्शक भी स्टोरी की रोचकता को देखकर आगे के एपिसोड देखने का लोभ छोड़ नहीं पाते और उलझे रहते हैं। सस्पेंस और ट्विस्ट एंड टर्न एलिमेंट्स वाले अपराध वाले शो के सबसे ज्यादा पॉपुलर होने का कारण यही है, कि उनमें दर्शकों को बांधने की क्षमता होती है। ओटीटी के लगभग सभी प्लेटफॉर्म पर अपराधों से जुड़ी वेब सीरीज की भरमार है।

सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली अपराध कथाओं में 'पाताल लोक' मानी जाती है, जो एक खूंखार अपराधी की कहानी है। इस क्राइम और सस्पेंस ड्रामा सीरीज में एक अलग ही लेवल का अपराध दिखाया गया। कहानी का मुख्य पात्र हथौड़ा त्यागी नाम का एक बदमाश होता है, जो लोगों को हथौड़े से मारने के लिए जाना जाता है। वहीं, दूसरी ओर जयदीप अहलावत इंस्पेक्टर हाथी राम की भूमिका में है। हथौड़ा त्यागी के किरदार में एक्टर अभिषेक बनर्जी की एक्टिंग देखने वाले को भी भयभीत कर देती है। ऐसी ही एक वेब सीरीज है 'मिर्जापुर' जिसने ओटीटी के दर्शकों की संख्या बढ़ाई थी। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र के जघन्य अपराधों को दर्शाती ये सीरीज अद्भुत साबित हुई। अब तक इसके दो सीजन 'मिर्जापुर' और 'मिर्जापुर-2' आ गए। अगले सीजन का दर्शकों इंतजार है। यह सीरीज पूर्वांचल के बाहुबली अखंडानंद त्रिपाठी और दो नए जांबाज लड़कों गुड्डू और बबलू की कहानी है।

ऐसी ही एक अपराध सीरीज 'रक्तांचल' है जिसकी कहानी अपराध और राजनीति के इर्द-गिर्द घूमती है। यह वेब सीरीज उत्तर प्रदेश में 90 के दशक में चल रही राजनीतिक और आपराधिक हलचल को दर्शाती है। रक्तांचल एक ऐसे लड़के की कहानी है जो अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए अपराध की दुनिया में कदम रखता है। अपराध की दुनिया में वह इतना आगे बढ़ जाता है कि फिर उसका वापस आना संभव नहीं होता। वह अपनों से भी कई बार ठगा जाता है। उसका सबसे बड़ा दुश्मन उसे मारने के लिए पूरी ताकत लगा देता है। लेकिन, वह एक बार फिर वापसी कर उसे कड़ी टक्कर देता है। सीरीज में यह भी दिखाया गया है कि किस तरह अपराध और सियासत की सांठगांठ चलती है। सीरीज के दो सीजन आ चुके हैं।

बिहार के राजनीतिक और आपराधिक पृष्ठभूमि को दर्शाती वेब सीरीज 'रंगबाज' में सियासत और क्राइम का गठजोड़ दिखाया गया है। बताया गया कि किस तरह एक बाहुबली के आगे पूरा सिस्टम चरमरा जाता है। वह कई हत्याओं गुनाहों में शामिल है। लेकिन, उसके खिलाफ न कोई गवाही देता है और न कोई सबूत मिलता है। बताया जाता है कि ये सीरीज बिहार की राजनीति और अपराध की सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। ओटीटी पर सिर्फ अपराध ही नहीं बिकता, इसकी आड़ में पुलिस की सक्रियता भी दर्शकों की पसंद है। 'दिल्ली क्राइम' के दो सीजन पसंद किए जाने का कारण यही है, कि इसमें अपराध के साथ पुलिस को भी उसी तरह सक्रिय बताया गया। शेफाली शाह, रसिका दुग्गल और राजेश तैलंग की इस वेब सीरीज ने दुनियाभर में काफी लोकप्रियता हासिल की। पहले सीजन में 'निर्भया रेप केस' जैसी जघन्य अपराध की कहानी दिखाई गई, तो सीजन 2 में एक और थ्रिलिंग क्राइम स्टोरी को दिखाया गया. जिसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। 'सीजन-2' में 2013 के कच्छा-बनियान गिरोह की रियल लाइफ घटना बयां की गई थी जो बुजुर्गों को निशाना बनाते थे और उन्हें बेरहमी से मार डालते थे। एक वेब सीरीज 'रुद्र- द एज ऑफ डार्कनेस' से एक्टर अजय देवगन ने ओटीटी डेब्यू किया था। ये सीरीज भी काफी पसंद की गई। ये शो ब्रिटिश सीरीज लूथर की रीमेक है और 2022 में रिलीज हुए सबसे अच्छे क्राइम शो में से एक रही। मुंबई पुलिस की स्पेशल क्राइम यूनिट पर आधारित यह शो डीसीपी रुद्रवीर सिंह के इर्द-गिर्द घूमता है, जिन्हें जटिल मामलों को सुलझाने के लिए जाना जाता है।

इससे पहले यही दौर मनोरंजन के टीवी चैनलों पर था। सोनी-टीवी पर 'सीआईडी' सीरियल 19 साल तक चला। ये शो इस चैनल के सबसे लोकप्रिय शो में से एक रहा। इसी चैनल पर 'क्राइम पेट्रोल' भी समाज में घटे अपराधों के नाट्य रूपांतरण वाला शो रहा, जिसे दर्शकों काफी सराहा। इन शो की टीआरपी अन्य शो से कहीं बेहतर देखी गई। वास्तव में इस तरह के टीवी शो की शुरुआत 1997 में सुहैब इलियासी ने की थी! वे सबसे पहले 'इंडियाज मोस्ट वांटेड' शो लेकर आए। उन्हें टीवी पर ऐसा क्राइम शो बनाने की प्रेरणा लंदन के चैनल-फोर पर दिखाए जाने वाले शो से मिली थी। भारतीय दर्शकों में ये टीवी शो बेहद लोकप्रिय हुआ था। 'इंडियाज मोस्ट वांटेड' का हर एपिसोड किसी एक फरार 'मोस्ट वांटेड' अपराधी पर होता था! अपराधी की वास्तविक तस्वीर के साथ उस कारनामे की कहानी को नाट्य रूपांतरण बनाकर दिखाया जाता था! तब इस शो की लोकप्रियता का आलम ये था, कि कई बड़े फरार अपराधी दर्शकों की मदद से दबोच लिए गए! यही टीवी शो बाद में 'फ्यूजिटिव मोस्ट वांटेड' नाम से 'दूरदर्शन' के परदे पर भी दिखाया गया।

धीरे-धीरे छोटे परदे के ये क्राइम शो इतने लोकप्रिय हो गए कि इनका एक अलग दर्शक वर्ग तैयार हो गया! ये क्राइम शो हॉरर मूवी जैसा कथा संसार रचते थे। इन शो को देखने का जूनून कुछ वैसा ही था जैसा कभी अपराध पत्रिकाएं 'मनोहर कहानियां' और 'सत्यकथा' पढ़कर लोग पूरा करते थे। जब अन्य मनोरंजन चैनलों पर सास, बहू मार्का सीरियलों की धूम थी, तब 'सोनी-टीवी' पर 'सीआईडी' ने अपनी धाक जमाई! मनगढ़ंत अपराध कथाओं की गुत्थी को नाटकीय तरीके से सुलझाने वाली एससीपी प्रद्युम्न की टीम को इतना पसंद किया गया कि ये सीरियल 19 साल तक चलता रहा। 'सोनी' के 'क्राइम पेट्रोल' में भी अपराधों की चीरफाड़ की जाती है, ताकि दर्शक अपराधी की मानसिक स्थिति को भी समझ सकें!

सवाल उठता है कि क्या अपराधियों को ग्लैमराइज तरीके से पेश किया जाना जरूरी है? जब लोग टीवी पर समाज में घटने वाले अपराध को सिर्फ खबर की तरह देखना चाहते हैं, तो उसे बढ़ा-चढ़ाकर क्यों दिखाया जाता है? ख़बरों में अपराध, मनोरंजन में अपराध के बाद फिर अपराधों का नाट्य रूपांतरण! मनोरंजन चैनलों पर तो इस तरह के शो बार-बार रिपीट किए जाते हैं! दर्शाया ये जाता है कि लोग इस तरह की ख़बरों से सीख लेकर सजग रहें! जबकि, वास्तव में ऐसा होता कहां है? बल्कि, इस तरह के शो से अपराधिक लोगों ने जरूर सीख लेना शुरू कर दी! वे पुलिस कार्रवाई को भी समझने लगे और क़ानूनी दांव पेंचों को भी! इससे ये बात भी साबित हो गई कि अपराध सबसे ज्यादा बिकने वाला विषय है! फिर उसे अखबारों में अपराध कथाओं की तरह पेश किया जाए! पत्रिकाओं में सत्यकथा बनाकर या फिर टीवी की ख़बरों में क्राइम रिपोर्ट बनाकर! पर सबसे ज्यादा घातक है अपराध का मनोरंजन जाना! वही आज सच बनकर सामने भी आ रहा है!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अभिनेताओं का जेल से वास्ता कुछ ज्यादा ही रहा

अशोक जोशी

जेल ऐसी जगह है जो शरीफ-बदमाश और नेताओं और अभिनेताओं में कोई अंतर नहीं करती। फ़िल्मी कथानकों में भी जेल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वास्तव में तो जेल जीवन पर हिंदी में गिनती की फिल्में बनी, जो इस जीवन का वास्तविक चित्रण करती

है। लेकिन, ज्यादातर फिल्मों में जेल को फैंसी आइटम की तरह ही दिखाया जाता रहा। हिंदी फिल्मों के लगभग सभी छोटे-बड़े अभिनेता और अभिनेत्रियां फिल्मों में जेल की हवा खा चुके हैं। लेकिन, कई अभिनेता वास्तविक जीवन में भी जेल की हवा खा चुके हैं।

इन दिनों हमारे देश में जेल की चर्चा कुछ खास ही हो रही है। आप पार्टी के कर्ताधर्ता अरविंद केजरीवाल की जेल यात्रा के बारे में तो अमेरिका भी टिप्पणी कर रहा है। जेल हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वैसे देखा जाए तो हमारे समाज में कई तरह के संस्थान होते हैं जो जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। स्कूल से जीवन संवरता है, भविष्य बनता है तो दफ्तरों में देश और दुनिया को आगे बढ़ाने के लिए तमाम फैसले लिए जाते हैं। न्यायालय में न्याय दिया जाता है, तो जेल में बिगड़े इंसानों को सुधारने का काम किया जाता है। जेल और इंसान का नाता बहुत पुराना है। जेल यदि बदनाम लोगों का ठिकाना है तो शरीफ लोग जिनमें आंदोलनकारी और राजनेता शामिल है, वह जेल जाने में अपनी शान समझते हैं।

जेल ऐसी जगह है जो जांत-पांत, धर्म-अधर्म, साधु-शैतान, शरीफ-बदमाश तथा नेताओं और अभिनेताओं में कोई अंतर नहीं करती। इसीलिए फिल्मों में भी जेल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आमतौर पर जेल को बदमाशों को सजा देकर रखने के लिए काम में लिया जाता है, लेकिन यही जेल हिन्दी फिल्मों का अभिन्न अंग बन गई है। आजादी से पहले बनने वाली फिल्मों में अपराधियों के साथ साथ स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े लोगों के जीवन को फिल्माने में जेल का उपयोग किया जाता था। अपराध जीवन पर बनी पहली फिल्म 'किस्मत' में भी जेल का दृश्य प्रभावी तरह से फिल्माया गया था।

जेल जीवन पर हिंदी में गिनती की फिल्में ही बनी हैं जो इस जीवन का वास्तविक चित्रण करती है। ज्यादातर फिल्मों में जेल को फैंसी आइटम की तरह ही दिखाया जाता रहा। कभी नायक को जेल में बंद गुंडे पीटते हैं, कभी वह अपने आपको बेगुनाह साबित करने जेल तोड़कर भाग जाता है। हिंदी फिल्मों के लगभग सभी छोटे-बड़े अभिनेता और अभिनेत्रियां फिल्मों में जेल की हवा खा चुके हैं।

इनमें अशोक कुमार जैसे दिग्गज से लेकर प्राण से लेकर अमजद खान जैसे खलनायक और नूतन से लेकर शर्मिला टैगोर जैसी सुंदर नायिका और आज के सलमान खान से लगाकर संजय दत्त तक सभी शामिल है। इनके अलावा इनका साथ देने के लिए कुछ चरित्र अभिनेताओं और कॉमेडियन को भी निर्माता-निर्देशक जेल में भेज देते हैं।

यदि हिंदी फिल्मों की त्रिमूर्ति की बात की जाए, तो तीनों ही फिल्मों में जेल के दृश्य दिखाई दिए है। इनमें भी बांके जवान देव आनंद का पलडा सबसे भारी हैं। उनकी ज्यादातर फिल्में ग्रे-शेड लिए होती थी, जिनमें उन्हें जेल की हवा खानी पड़ती थी। उनकी फिल्मों में सीआईडी, जोशीला, जॉनी मेरा नाम, काला पानी, काला बाजार, ज्वेल थीफ, शरीफ बदमाश और 'गाइड' जैसी तमाम फिल्मों में जेल एक अहम हिस्सा रही हैं। राजकपूर भी 'आवारा' जैसी फिल्मों में सींखचों के पीछे दिखाई दिए हैं। दिलीप कुमार जो कि ज्यादातर फिल्मों में ग्रामीण भारतीय नायक की छवि में रहे हैं, पर वे भी शहीद, क्रांति, शक्ति और कर्मा जैसी फिल्मों में जेल के आसपास दिखाई दिए। लेकिन यह बात अलग है कि इन फिल्मों में वे कोई अपराधी नहीं थे।

जिस तरह फिल्मों में नायकों और खलनायकों का आना-जाना दिखाया जाना आम बात है। वहीं उनके आने-जाने के वे तरीके भी आम होते हैं। पहले जब नायक या खलनायक जेल के बड़े दरवाजे के साइड में बने छोटे दरवाजे से बाहर आता था, जो वह सबसे पहले अंगडाई लेकर आसमान पर नजर डालता था, जहां उड़ते परिंदे उसके आजाद होने का अहसास दिलाते थे। इसके बाद सामाजिक फिल्मों के दौर में जब नायक सुधरकर जेल से बाहर आता है, तो जेल के बाहर नायिका उसका इंतजार करती दिखाई देती थी। खलनायक जब बाहर निकलते थे, तो उन्हें लेने के लिए किसी अपराधी की लम्बी चौड़ी कार खड़ी होती थी।

जहां तक फिल्मी जेल की बात है तो वह सामाजिक फिल्मों से लेकर अपराधिक फिल्मों और राजनीतिक, पौराणिक, फैंटेसी और धार्मिक सभी फिल्मों में दिखाई दी। भगवान कृष्ण से जुड़ी तमाम फिल्मों में जेल को उनका जन्मस्थल बताया गया है। ऐतिहासिक फिल्मों में कभी राजा देशद्रोहियों को जेल में डाल देता है, तो कभी राजद्रोही मंत्री राजा को जेल में ठूंस कर सत्ता हथिया लेता है। फिल्मों में जेल के अंदर कैदी या तो गाने गाते है या जेल काटकर भागने की फिराक में रहते हैं। कुछ फिल्मों में अभिनेता या खलनायकों पर थर्ड डिग्री जैसे दृश्य भी दिखाए जाते हैं। ऐसी भी फिल्में हैं जिनमें जेल के अंदर हंसोडियों की फौज मजेदार गीत गाकर दर्शकों का मनोरंजन करती दिखाई देती थी। जेल के अंदर फिल्माए गए गानों में मेरा रंग दे बसंती चोला, किसका रास्ता देखे और घुंघरू की तरह बजता ही रहा हूं जैसे गीत बहुत लोकप्रिय हुए हैं। जेल शीर्षक से बनी फिल्मों में जेल यात्रा और जेलर जैसी फिल्मों के साथ कैदी, उम्रकैद, कैदी नंबर 911 जैसी फिल्मों का नामकरण हुआ है।

किसी ने इस बात पर शायद ही कभी गौर किया हो कि ज्यादातर क्लासिक और सफल फिल्मों का रास्ता जेल से होकर ही गुजरता है। इन फिल्मों में अशोक कुमार की समाधि, किस्मत और महल, दिलीप कुमार और मनोज कुमार की शहीद, वी शांताराम की दो आंखें बारह हाथ, सोहराब मोदी की जेलर, देव आनन्द की गाइड, कालापानी, सीआईडी, काला बाजार, जॉनी मेरा नाम, शरीफ बदमाश, अमिताभ की जंजीर, कालिया और शोले, राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर की आराधना और रोटी, नूतन की बंदिनी, राज कपूर की आवारा, दिलीप कुमार की शक्ति, क्रांति ,कर्मा, धर्मेन्द्र की शोले और क्रोध, नील नितिन मुकेश की जेल, अजय देवगन की गंगाजल और सलमान खान की बजरंगी भाई जान, शामिल है।

फिल्मों में तो लगभग सभी अभिनेता और अभिनेत्रियां जेल की सैर कर चुकी है। लेकिन, वास्तविक जीवन में भी जेल ने इनका पीछा नहीं छोडा है। संजय दत्त ऐसे स्टार हैं जो हथियार रखने के जुर्म में सबसे ज्यादा लम्बी जेल की सजा काट चुके हैं। सलमान खान भी राजस्थान के काले हिरण प्रकरण में कई बार हवालात की सैर कर चुके हैं। राजकुमार जो वास्तविक जीवन में पुलिस इंस्पेक्टर थे वह भी एक महिला की हत्या के आरोप में जेल की सैर कर चुके हैं, उन्हें विजय आनंद ने बचाया था। राजपाल यादव निर्माता के पैसे न चुकाने के जुर्म में जेल की हवा खा चुके है। तनूजा जैसी समर्थ अभिनेत्री भी नशा कर कार दुर्घटना करने के जुर्म में जेल जा चुकी हैं। जेल यात्रा में नेता और अभिनेता के बीच कड़ा मुकाबला जारी है और अरविंद केजरीवाल इसका ताजा उदाहरण है।

ना बदला है, (क्या) बदलेगा कभी!

प्रकाश पुरोहित

मोहन भिया' बहुत ही अच्छा ट्रंपेट बजाते थे। पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन इसी खूबी की वजह से उन्हें सिपाही की तरह भर्ती कर लिया गया था। कोई चालीस साल पहले सिपाही में भर्ती होने के लिए ऐसी ही किसी योग्यता की जरूरत होती थी और पुलिस अधीक्षक यदि अर्जी पर दस्तखत कर दें तो नौकरी मिल जाती थी। मोहन भिया को ट्रंपेट से प्यार था और जब भी मौका मिलता रियाज करने लगते और हम बच्चे उनके आसपास बैठ सुनते रहते। सरकारी क्वार्टर की दहलीज के बीचोबीच बैठ, दोनों पैर दरवाजे की चौखट से सटा देते और आंखें बंद कर घंटों बजाया करते थे। जब मालूम हुआ कि यही उनकी नौकरी है तो हमारे मन में भी ऐसा ही बनने का सपना उगने लगा था। कितनी बढ़िया नौकरी है ना, बस बाजा बजाओ!

वह तो एक दिन जब किसी अधिकारी के बच्चे के साथ उसके बंगले जाने का मौका मिला तो दिल धक् से रह गया, देखा मोहन भिया नौकरों की तरह काम कर रहे हैं। उन्हें 'अर्दली' कहा जा रहा था और उन जैसे आधा दर्जन अर्दली और भी थे उस बंगले में, जो थे तो सिपाही, अपनी किसी खासियत की वजह से, लेकिन पढ़े-लिखे नहीं थे तो उनसे इस तरह बेगार ली जाती थी। अफसरों के ही नहीं, उनके बच्चों के भी जूते पॉलिश करते थे, खाना पकाते थे, कपड़े धोते और इस्त्री करते, और तो और, साहब की पाली हुई गाय या भैंस का दूध ही नहीं

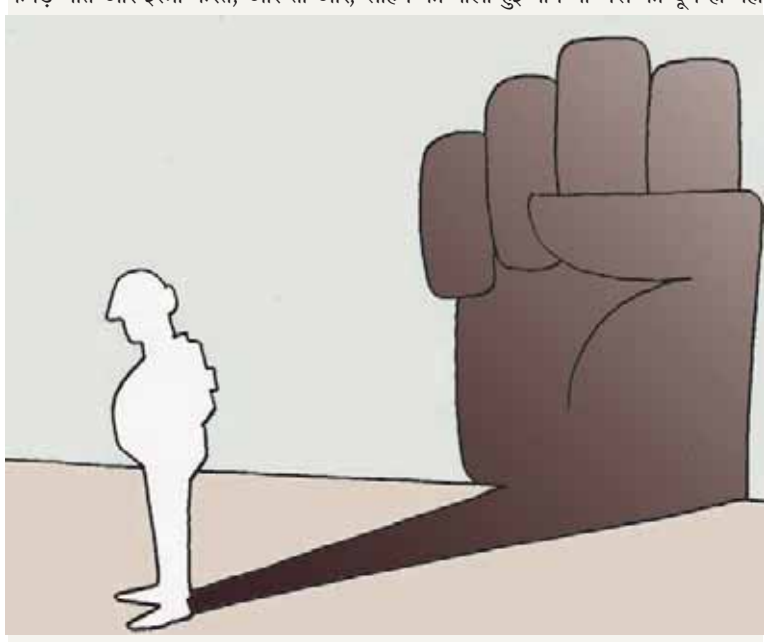

निकालते, चराने जाते... दूध ज्यादा होता तो बेचने भी जाते। हर बात पर झिड़की मिलती और कभी-कभी तो पिटाई भी हो जाती। जूता ठीक से नहीं चमका तो उसी जूते से सबक सिखाते थे साहब।

इनकी ड्यूटी का कोई समय नहीं होता था। जब मंगलवार, शुक्रवार को परेड होती तो मोहन भिया कड़क वर्दी पहनते और पुलिस बैंड का हिस्सा बन जाते। यही नहीं, जब शहर में कोई दंगा या अनहोनी होती और रोलकॉल का सायरन बजता तो दौड़ते हुए वर्दी पहनते और लट्ठ लेकर पुलिस-वैन में जा बैठते और आंदोलनकारियों के पत्थर खाते, क्योंकि इन्हें ही आगे किया जाता। लौटते में 'प्रसादी' का सबूत सिर या हाथ-पैर पर बंधा अस्पताल का बेंडेज होता।

आदिवासी इलाके से आए थे मोहन भिया। उन्हें शहरी समझ नहीं आता था कि कौन-सा काम कैसे करना है। उन्हें तो किसी अफसर ने मुंह से बिगुल बजाते सुन लिया था दौरे में और साथ बैठा लाए थे। मोहन भिया को संगीत की परिभाषा तो नहीं आती थी, मगर कान सुरीले थे, जल्द ही ट्रंपेट बजाने लगे। हर दिन तो बाजा बजाने से रहे और फिर अफसर भी बदलते रहे और उनके मिजाज भी। तो अगले अफसर ने मोहन भिया को घर के काम में जोत दिया, फिर तो यही उनकी नौकरी का पक्का हिस्सा हो गया। यह जरूर था कि उन्हें हर समय खाकी वर्दी ही पहने रहना पड़ती थी, ऐसे ही मैंने उन्हें बर्तन मांजते भी कई बार देखा था। वहां मुझसे बात नहीं करते थे और ना ही इस तरह का कोई संकेत ही देते थे कि हम एक-दूसरे को पहचानते भी हैं।

जब घर से निकलते तो ट्रंपेट हाथ में ले कर निकलते थे। बंगले के पीछे गाय के ओसारे में रख कर पतलून के पायंचे घुटनों तक चढ़ाते और काम में भिड़ जाते। एक रोज उन्होंने कहा था 'घर पर मत बताना किसी को, यहां क्या-क्या काम करता हूं', बस इतना ही। मेरे लिए तो उनका ट्रंपेट बजाना आदर्श था, तो इतना वादा तो निभाना ही था। एक बार साहब की बाईसाहब ने मोहन भिया को अपना ब्लाउज ठीक करवाने के लिए दिया। दर्जी भी तो पुलिस का सिपाही ही था, जो पुलिस की वर्दी रफू करता था, अल्टर करता था और साहब के घरवालों के भी कपड़े ठीक करता था। बाईसाब ने बताया था कि बांह एक इंच कम करनी है। मोहन भिया गलत बोल आए और पोलके का सत्यानाश हो गया, ऐसा बाईसाब का आरोप था। उनकी तनख्वाह से पैसे भी कटे और साहब के हाथ का एक झापड़ भी खाया। दर्जी इसलिए पिटा कि मोहन तो अर्दली है, जंगली है, आदिवासी है, तुम्हे तो पता था बाईसाब का नाप। मैंने अपने आदर्श को उस रोज यूं अपमानित होते देखा तो ट्रंपेट का मोह ही खत्म हो गया।

एक बार ऐसे ही किसी बात पर साहब ने जब हाथ उठाया तो छोटे कद के मोहन भिया ने उछल कर उनकी गर्दन पर हाथ डाल दिया, इस झटके को साहब झेल नहीं सके और जमीन पर आ गिरे। मोहन भिया उनके ऊपर थे। उनकी आंखें जैसे जल रही थीं और उस दिन वे कुछ भी कर सकते थे कि बाकी अर्दलियों ने पकड़ा और साहब को बचाया, उठाया। मोहन भिया गिरफ्तार हो गए। जब उन्हें पकड़ कर ले जा रहे थे तब भी उनके हाथ में ट्रंपेट था और वे बजा रहे थे। मानो रण जीत कर सिपाही घर लौट रहा हो। फिर कभी नहीं देखा उनको। सुना जरूर कि सस्पेंड हो गए, सजा मिली और बर्खास्त कर दिए गए। लौट गए फिर अपने आदिवासी फालिये में, जहां से आए थे, लेकिन ऐसा हर अर्दली तो नहीं कर सकता है ना, फिर भी कुछ समय तक मोहन भिया की दहशत रही अफसर-बिरादरी में।

मोहन भिया की याद आज इसलिए आई कि अभी दो दिन पहले ही पुलिस अफसरों के बंगलों पर काम करने वाले अर्दलियों ने इकट्ठे होकर गुहार लगाई है कि हमें सिपाही की तरह भर्ती किया है तो हमसे सिपाही का ही काम लिया जाए, बंगलों में बेगार नहीं ली जाए। सरकार की तरफ से बार-बार खानापूर्ति के लिए यह आदेश निकाला जाता है कि बंगलों पर सिपाहियों को अर्दली नहीं रखा जाए, लेकिन आदेश का पालन करवाने वाले सभी अफसर हैं, इसलिए कौन रोक लगा सकता है। बाईसा'ब के बीच होड़ होती रहती कि 'तेरे बंगले पर, मेरे बंगले से ज्यादा अर्दली कैसे?' अर्दलियों की तादाद से अफसर बीवियों का अहम तुष्ट होता है, तो कौन इन्हें सिपाही बनने देगा! पौन सदी की आजादी में कुछ बदलाव देख रहे हैं आप! नेताओं को वहम है, सरकार चला रहे हैं, मगर असल में सरकार तो अफसर ही चलाते हैं, जो आमजन को ठेंगे पर रखते हैं!

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

दर्द के अनेक पड़ावों से गुजरती स्त्री

मैंने अपनी गायनोलॉजिकल डॉक्टर मित्र से बात की। उसने मुझे बताया कि स्त्री के पीरियड्स समाप्त होने की उम्र 45-55 की होती है और उसके बाद मेनोपॉज की उम्र 4 से 5 साल तक चलती है। इस दौरान स्त्री का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। आजकल कुछ मेडीकल प्रॉब्लम की वजह से हिस्टरक्टॉमी (यूटेरस निकालना) भी होती है तब भी मेनोपॉज होता है कोशिश की जाती है ओव्हरी ना निकाली जाये क्योंकि ओव्हरी से ऐस्ट्रोजन हार्मोन निकलता है जो शरीर में हार्ट की गतिविधि, न्यूरॉन्स, बोन्स का ख्याल रखता है। बहुधा स्त्रियों को ऐसे समय, खूब गर्म पसीने छूटते है (वो कहते है देखो इन्हें बड़ी गर्मी लगती है)। सच कह रही हूं, स्त्रियों के लिये मेनोपॉज से होने वाले लक्षणों के बारे में खुद पता नहीं होता। मेरी अपनी मददगार दिन प्रतिदिन व्यवहार में बदलती जा रही है चिड़चिड़ी, सरदर्द से परेशान और दुबली होती जा रही है। सोती नहीं है। तब उसने मुझे बताया उसके पीरियड्स बंद हो रहे है। तब मेरी डॉक्टर मित्र ने उसके पति को भी बुलाया और उसके शरीर में होने वाले परिवर्तन से वाक़िफ करवाया।

हम स्त्रियों के जीवन में कोई ना कोई ऐसी शारीरिक समस्यायें होती है जिसका हम पर मानसिक प्रभाव पड़ता है। जैसे पीरियड्स होना या नहीं होना, उसके साथ शारीरिक मानसिक बदलाव फिर बच्चा होना, प्रेग्नेंसी द्वारा शारीरिक बदलावों को आसानी से देखा जा सकता है पर मानसिक व्यवहार को इग्नोर कर दिया जाता है खैर आजकल की जेनेरेशन 'गूगल' से बहुत कुछ जान लेती है। पर एक ऐसा अछूता विषय है जिसे खास तवज्जोह नहीं दी जाती है उल्टे मज़ाक ही बनाया जाता है और वो है ''मेनोपॉज'' (रजोनिवृति)। मैं इस विषय पर क्यों लिख रही हूँ? पुरूष या समाज इसे तकलीफ की श्रेणी में नहीं लेता बल्कि तुम तो अब बूढ़ी हो गई हो कहा जाता है (मानों पुरूष समाज अमृत बूटी पीकर आया है)!

इस बारे में मैंने अपनी गायनोलॉजिकल डॉक्टर मित्र से बात की। उसने मुझे बताया कि स्त्री के पीरियड्स समाप्त होने की उम्र 45-55 की होती है और उसके बाद मेनोपॉज की उम्र 4 से 5 साल तक चलती है। इस दौरान स्त्री का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। आजकल कुछ मेडीकल प्रॉब्लम की वजह से हिस्टरक्टॉमी (यूटेरस निकालना) भी होती है तब भी मेनोपॉज होता है कोशिश की जाती है ओव्हरी ना निकाली जाये क्योंकि ओव्हरी से ऐस्ट्रोजन हार्मोन निकलता है जो शरीर में हार्ट की गतिविधि, न्यूरॉन्स, बोन्स का ख्याल रखता है। बहुधा स्त्रियों को ऐसे समय, खूब गर्म पसीने छूटते है (वो कहते है देखो इन्हें बड़ी गर्मी लगती है)। सच कह रही हूं, स्त्रियों के लिये मेनोपॉज से होने वाले लक्षणों के बारे में खुद पता नहीं होता। मेरी अपनी मददगार दिन प्रतिदिन व्यवहार में बदलती जा रही है चिड़चिड़ी, सरदर्द से परेशान और दुबली होती जा रही है। सोती नहीं है। तब उसने मुझे बताया उसके पीरियड्स बंद हो रहे है। तब मेरी डॉक्टर मित्र ने उसके पति को भी बुलाया और उसके शरीर में होने वाले परिवर्तन से वाक़िफ करवाया।

अब मैं पढ़े लिखे समाज को भी बताना चाहती हूं कि बैचैनी, नींद ना आना, मूडस्विंग होना, कभी कभी कहा जाता है ल्यूनर का

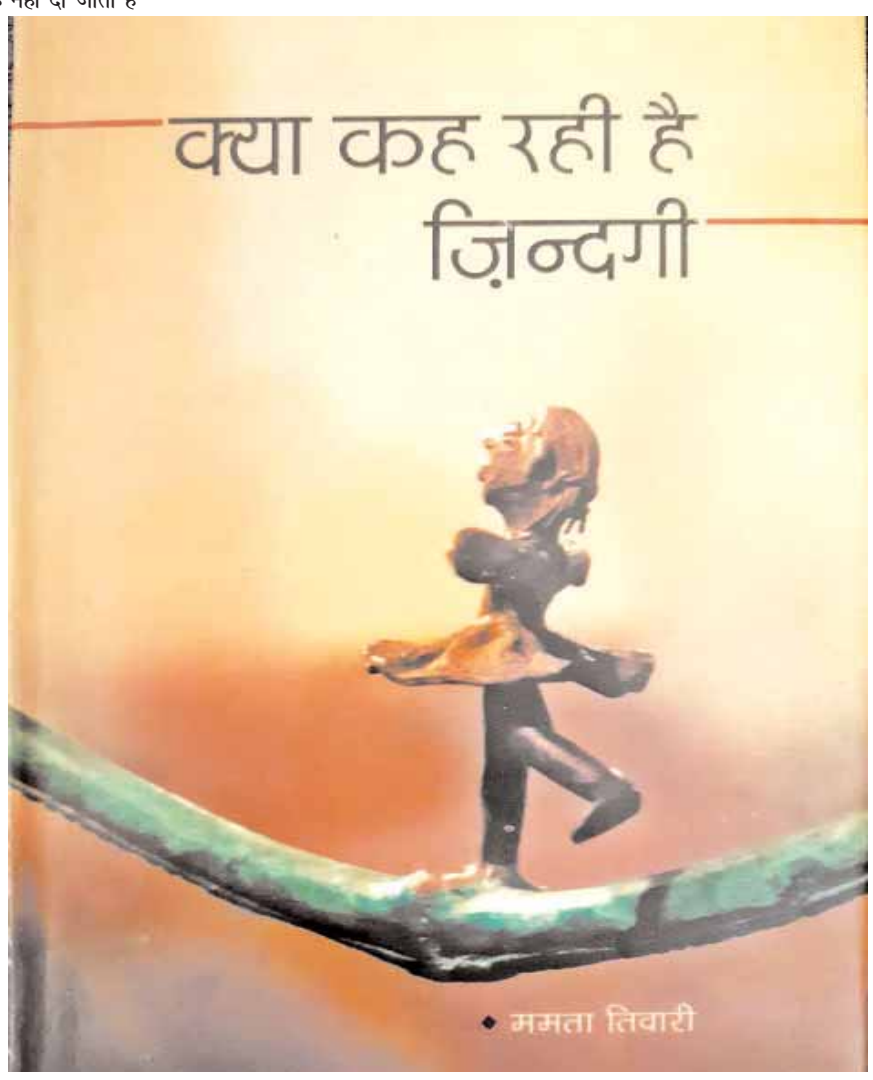

प्रभाव भी होता है। कभी कभी फ़िक्र होना, हिडन हार्ट डिज़ीज, उदासीनता फोकस ना होना पाना। ये ऐसे विषय है जिसमें स्त्री अवसाद में आ जाती है। वो खुद भी नहीं समझ पाती कि ऐसा उसकी जिंदगी में क्यों हो रहा है। किसी को बताओ तो ज़्यादातर लोग मज़ाक बनाते है।

पुरूष समाज को जानना चाहिये आपके जीवन में भी मेनोपॉज होता है जिसका जिक्र मैं अगले आलेख में दूँगी। अभी तो पुरूष समाज, घर के बच्चे पति सब महिला को सहयोग करें क्योंकि इस समय वो कोमल हृदय हो जाती है। छोटी छोटी बातों पे रो पड़ती है। एक्ट्रोजन के उतार चढ़ाव से उसका मूड स्विंग होता है। आप नहीं समझेंगे तो ये 4-5 साल कैसे बितायेगी और स्त्रियों अगर कोई आप पर ध्यान नहीं दे रहा है तो आप को अपना ख़्याल खुद रखना होगा। अब आप ऐसे काम करें जो आपको एक्टिव बनाये रखें। कोशिश करें राइट की जगह लेफ्ट हेंड से काम करें, सुडोकू खेलें, पज़ल सॉल्व करें, ब्रेन को मजबूत रखने की जो भी गतिविधियां हो उन्हें करने की कोशिश करें। कैल्शियम ले ताकि आपकी हड्डियां मजबूत रहे।

मन को शांत रखने के लिये ध्यान, संगीत योग, सहेलियों से मिलना, पढ़ना पसंद का काम करें धीरे धीरे समय निकल ही जायेगा क्या निकल जाता है फिर भी अगर परिवार साथ हो तो क्या बात है। क्या खूबसूरत सुबह होगी जब आप देर तक सोई रहें किसी ने आप को नहीं उठाया बल्कि आंख खुलते ही परिवार के किसी सदस्य द्वारा आपको चाय की प्याली मिले ये कहते हुये और क्या कह रही है ज़िंदगी?

//भाषान्तर//

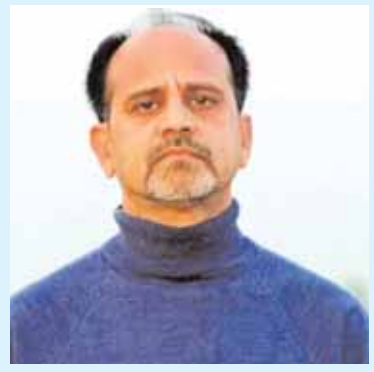

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विख्यात पोलिश कवयित्री अन्ना स्विर की एक कविता का भावानुवाद।

मैं अपनी देह से बात करती हूँ

ओ मेरी देह, तुम एक पशु हो
जिस पर फबता है
एकाग्रता और अनुशासन का व्यवहार।
एक कोशिश
किसी खिलाडी, कोई संत और एक योगी की।

अच्छी तरह प्रशिक्षित,
तुम मेरे लिए बन सकती हो
एक दरवाजा
जिससे होकर मैं छोड़ दूंगी खुद को
एक दरवाजा
जिससे होकर मैं प्रवेश करूंगी खुद में।
धरती के केंद्र की तरफ झुकी हुई लम्बवत रेखा
बृहस्पति के लिए कोई ब्रह्मांडीय जहाज।

ओ मेरी देह, तुम एक पशु हो
जिसे महत्वाकांक्षा से
कोई परहेज नहीं।
अनन्त संभावनाएं
हमारे लिए खुली हुई हैं।

कुछ न बन सका..., तमाशा बना दिया!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इन दिनों **सोशल मीडिया पर खाने के वीडियो** की बाढ़ है। जिसे देखिए या तो खाना बना रहा है या खा रहा है या बता रहा है कि फलां जगह फलां न खाया तो जिंदगी बर्बाद है। भारत से कुछ वीडियो देखने को मिले, जिन्हें देख कर दिमाग का दही होना ही था। अहमदाबाद का वीडियो है, जहां दो मोनाको बिस्किट के बीच में आलू का मसाला भर कर इस पूरे अजूबे को बेसन के घोल में डुबा कर तला गया, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई है (स्कॉटलैंड में मार्स चॉकलेट बार को मैदे के घोल में डुबा कर तलना जब से देखा है, तब से खाने की किसी भी चीज को किसी भी घोल में तरबतर होकर तेल में पकते हुए देख कर आश्चर्य नहीं होता है)। इस मोनाको बिस्किट भजिए को फिर टुकड़ों में काट कर जब ढेर सारे मसाले और दूसरी चीजों के साथ परोसा हुआ देखा तो दिमाग चकरघिन्नी हो गया।

फ्यूजन फूड के नाम पर कुछ भी पकाया जा रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर डिश में चार-पांच चीज डाली ही जाए। अनगिनत बार ऐसा कुछ सामने आता है और जिस तरह से चीज और बटर का उपयोग होता है इन खानों में, उसे देखकर ही हार्ट-अटैक आने का खतरा बढ़ जाता है। परोसने के एक-एक हिस्से में पाव-पाव भर चीज़ और मक्खन डाल दिया जाता है। यह सब नया पकाने-दिखाने के नाम पर हो रहा है। इतना ही नहीं भारत से घूमने वाले भी वीडियो बना रहे हैं कि यूरोप की होटल में उन्हें देसी नाश्ता, देसी खाना नहीं मिलता। एक महिला ने तो वीडियो में कह दिया कि अंग्रेजों ने इतने साल राज किया, लेकिन नाश्ता बनाना नहीं सीखा, कम से कम महिलाएं तो सीख ही सकती थीं। ऐसा कहते वक्त इंग्लिश कंट्रीसाइड में नहीं बल्कि जर्मनी में थी।

खबर आई कि चीज से बनने वाली मिठाई में रसमलाई दूसरे नंबर पर है। अब स्वाद का कोई माप तो है नहीं कि आखिर ऐसा क्या है रसमलाई में, जो इस मुकाम तक पहुंची या ऐसा क्या नहीं है जो पहला नंबर आने से चूक गई। रसमलाई के हक में भारत से लोगों ने खूब वीडियो बनाए और इन्हीं में से है लल्लनटॉप का वीडियो, जहां जी भर के अपने-अपने इलाके की मिठाइयों का बखान करते नजर आए। उत्साह में पोलैंड की मिठाई को पहले नंबर से हटाने की भी बात कह गए।

अपने घर के खाने की तारीफ तो वाजिब है, लेकिन यह कुछ ज्यादती है कि दूसरे खाने को तवज्जो ही न दी जाए। कहां गए वो लोग, जो घर के खाने को तरजीह देते थे, जो खाना बनाने के पुराने तौर-तरीकों और रेसेपी में वही पुराना वाला स्वाद ढूंढते फिरते थे। एक फिल्म में फूड क्रिटिक जब खाना खाने की शुरुआत करता है तो सबकी धड़कनें बढ़ जाती हैं, लेकिन जैसे ही उसे वो स्वाद मिलता है, जो बचपन की याद दिलाता है तो मामला अलग ही हो जाता है। नए तरीकों से खाना बनाना गलत नहीं है, लेकिन जिस तरह बिना सोचे-समझे कुछ नया की होड़ में पनीर और चीज से मिलावट हो रही है, वो नाकाबिले बर्दाश्त है।

भारतीय खाना वैसे भी दुनिया में स्वाद के दम पर ही तो मुकाम बना चुका है, ऐसे में न तो कुछ नया खोजने की जरूरत है न ही पुराने को भूल जाने की। जरूरत है बस, खाने के साथ छेड़छाड़ के बंद होने की, वरना दुबेजी के चौबेजी और छब्बेजी वाली कहावत याद ही होगी!